सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 85, नई दिल्ली, बुधवार 04 जून 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर मेहनत को आदत बना लिया जाए तो कामयाबी मुकद्दर बन जाती है।

03 दिल्ली से हार कर पंजाब भागे मनीष सिसोदिया का आज ब्यान....

06 घटती स्मरण शक्ति चिंतनीय

08 मुख्यमंत्री के भद्रक कार्यक्रम में मंच पर क्यों बैठे मनमोहन सामल? बिजेड़ी

दिल्ली-एनसीआर की सड़कें होंगी धूल मुक्त, डिजाइनिंग में होगा बदलाव

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) की सड़कों को धूल मुक्त बनाने के लिए डिजाइन में बदलाव किया जाएगा। सीएक्यूएम और राहगीरी फाउंडेशन के बीच एमओयू होगा जिसके तहत सड़कों का नया स्वरूप तैयार किया जाएगा। इसमें ग्रीन बेल्ट फुटपाथ साइकिल ट्रैक और वेंडर जोन बनाए जाएंगे। गुरुग्राम में राहगिरी फाउंडेशन ने ऐसे प्रयोग किए हैं जिनसे सकारात्मक परिणाम मिले हैं। विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर एमओयू पर हस्ताक्षर किए जाएंगे।

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) की सड़कों को धूल मुक्त बनाने के लिए उनके डिजाइन में बदलाव किया जाएगा। यह बदलाव इस तरह से किया जाएगा कि न सिर्फ धूल प्रदूषण रुकेगा बल्कि सड़कों से अतिक्रमण भी हटेगा। इसके अलावा सड़कें आकर्षक दिखेंगी, पैदल यात्री क्रॉसिंग और साइकिल ट्रैक को भी बढ़ावा मिलेगा।

सीएक्यूएम और राहगीरी फाउंडेशन के बीच कल होगा एमओयू

सड़कों को फिर से डिजाइन करने के लिए एयर क्वालिटी मैनेजमेंट कमीशन (सीएक्यूएम) और एनजीओ राहगीरी फाउंडेशन के बीच एमओयू होने जा रहा है। विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर गुरुवार को इस एमओयू पर हस्ताक्षर किए जाएंगे।

एमओयू के तहत राहगीरी फाउंडेशन की तकनीकी सलाह पर सड़कों की फिर से डिजाइनिंग की जाएगी। सीएक्यूएम के निर्देश पर सड़क निर्माण एजेंसियां राहगीरी फाउंडेशन के तकनीकी ज्ञान पर डीपीआर यानी विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करेंगी। इस रिपोर्ट के आधार पर सड़कों की फिर से डिजाइनिंग शुरू की जाएगी।

नौ शहरों की सड़कों का होगा नया स्वरूप

एमओयू के तहत दिल्ली, गुरुग्राम, फरीदाबाद, सोनीपत, गाजियाबाद, ग्रेटर नोएडा, नोएडा, भिवाड़ी और मानेसर की सड़कों का नया स्वरूप तैयार किया जाएगा। सभी छोटी-बड़ी सड़कों को नया स्वरूप देने का हिस्सा बनाया

जाएगा। इस काम को पूरा करने के लिए दो, तीन और पांच साल के अल्पकालिक और दीर्घकालिक लक्ष्य होंगे।

सड़कों के नए स्वरूप में क्या होगा?

सड़कों का नया स्वरूप तैयार करते समय न सिर्फ उन्हें दोबारा बनाया जाएगा, बल्कि दोनों तरफ 10-10 मीटर के हिस्से को अलग तरीके से विकसित किया जाएगा। इसके तहत सड़कों के दोनों तरफ कच्ची जगह लगभग नहीं रहेगी। दो-दो मीटर की ग्रीन बेल्ट बनाई जाएगी, दो मीटर का फुटपाथ, दो मीटर का साइकिल ट्रैक, फिर दो मीटर की ग्रीन बेल्ट और उसके बाद दो मीटर का वेंडर जोन तैयार किया जाएगा।

इस 10-10 मीटर हिस्से पर कंक्रीट या चारकोल नहीं बल्कि इंटरलॉक टाइलें बिछाई जाएंगी। ग्रीन बेल्ट में लगाए जाने वाले पेड़-पौधे भी देशी प्रजाति के होंगे, जो धूल को सोख लेते हैं। ग्रीन बेल्ट में ही वर्षा जल संचयन के लिए प्राकृतिक नालों का निर्माण किया जाएगा, ताकि भूजल को एकत्र किया जा सके। सड़कों का समतलीकरण एक समान होगा। वेंडर जोन के स्थान पर होने के कारण सड़क किनारे रेहड़ी-पटरी नहीं लगेगी। फुटपाथ पर पैदल यात्री और साइकिल ट्रैक पर साइकिल सवार भी बिना रोक-टोक आगे बढ़ सकेंगे।

पहले कहां हुआ था यह प्रयोग

राहगिरी फाउंडेशन ने गुरुग्राम के उद्योग विहार में ऐसी दो सड़कें बनाई हैं। एक का नाम जनपथ और दूसरी का नाम गली नंबर 7 रखा गया है। तीन और सड़कों पर काम शुरू होने वाला है। हाल ही में हरियाणा के सीएम नायब सिंह सैनी ने गली नंबर 7 का दौरा करने के बाद इसका नाम अटल पथ रखने का निर्देश दिया है।

सड़कों के डिजाइन में बदलाव कर सतही धूल को खत्म किया जाएगा। धूल को सोखने वाले देशी प्रजाति के पेड़-पौधे वातावरण में धूल को नियंत्रित करेंगे। बारिश के पानी की बर्बादी नहीं होगी। जाम नहीं लगेगा और न ही वाहनों की गति कम होगी।

-सारिका पांडा भट्ट, संस्थापक अध्यक्ष, राहगिरी फाउंडेशन

सड़कें हमारे शहरों की धमनियां हैं, उन्हें अवरुद्ध नहीं किया जा सकता। जटिल शहरी चुनौतियों का समाधान करने के लिए, हमें सड़कों को पूरी तरह से सड़कों के रूप में फिर से डिजाइन करना चाहिए, न केवल कारों के लिए, बल्कि लोगों के लिए भी।

पैदल यात्री-अनुकूल डिजाइन, गैर-मोटर चालित परिवहन और सामाजिक समानता पर जोर उत्सर्जन को कम करेगा और सार्वजनिक स्थान को बहाल करेगा।

-सुजीत बाजपेयी, वरिष्ठ सदस्य, CAQM

सड़क सुरक्षा जागरूकता समर कैंप 2025 का तीसरा और अंतिम बैच दिल्ली के यातायात प्रशिक्षण पार्कों में उत्साहपूर्ण भागीदारी के साथ शुरू हुआ

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली: दिल्ली यातायात पुलिस की प्रमुख पहल, सड़क सुरक्षा जागरूकता समर कैंप - 2025, अपनी प्रेरक यात्रा जारी रखते हुए तीसरे और अंतिम बैच की शुरुआत दिल्ली के चार यातायात प्रशिक्षण पार्कों में हुई। छोटी उम्र से ही सड़क सुरक्षा की संस्कृति विकसित करने के मिशन के साथ, इस बैच में कक्षा 6 से 12 तक के छात्रों की उत्साही भागीदारी देखी गई, जो मज़ेदार, शैक्षिक अनुभवों के माध्यम से सीखने और जुड़ने के लिए उत्सुक थे।बाबा खड़क सिंह मार्ग स्थित ट्रैफिक ट्रेनिंग पार्क में लगभग 128 छात्रों ने भाग लिया और बैच का उद्घाटन एसीपी आरएससी अनिल कुमार तोमर और टीआई/आरएससी सुश्री मंजू सिंह ने किया। बाल भवन ट्रैफिक ट्रेनिंग पार्क में लगभग 106 छात्र और 20 अभिभावक शामिल हुए, बैच का उद्घाटन एसीपी कमला मार्केट संजय सिंह जायसवाल और टीआई कमला मार्केट अमृत लाल मीना ने किया। टीटी पार्क पंजाबी बाग में लगभग 200 छात्र शिविर में शामिल हुए, जिसका उद्घाटन टीआई राजौरी गार्डेन कमल कुमार ने किया, जबकि टीटी पार्क रोशनारा बाग में लगभग 140 छात्रों ने भाग लिया, जिसका उद्घाटन टीआई/एसबीसी सुधीर कुमार ने किया। ग्रीष्मकालीन शिविर ने एक संपूर्ण शैक्षिक अनुभव प्रदान किया, जिसमें सीखने के साथ-साथ इंटरैक्टिव, व्यावहारिक प्रशिक्षण भी शामिल था। सत्र की शुरुआत छात्रों को ऊर्जावान और केंद्रित करने के लिए योग अभ्यास से हुई। इसके बाद प्रतिभागियों को लाइव ट्रैफिक ड्रिल सिमुलेशन में डुबो दिया गया, जिससे उन्हें ट्रैफिक व्यवहार और नियमों को समझने के लिए एक सुरक्षित और यथार्थवादी वातावरण मिला। विशेषज्ञों के नेतृत्व में व्याख्यानों ने आवश्यक सड़क सुरक्षा सिद्धांतों के बारे में उनके ज्ञान को गहरा किया, जबकि लैंगिक संवेदनशीलता पर चर्चाओं ने सार्वजनिक स्थानों पर सम्मान और समावेश को प्रोत्साहित किया।

छात्रों को यातायात संकेतों और संकेतों की मूल बातें भी बताई गईं, और सीपीआर और प्राथमिक चिकित्सा जैसी जीवन रक्षक तकनीकें सीखीं। सड़कों पर विचारशील और जिम्मेदार व्यवहार विकसित करने के लिए डिज़ाइन किए गए एक विशेष मॉड्यूल में, छात्रों ने पता लगाया कि कैसे मानसिकता और जागरूकता दुर्घटनाओं को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। विशेषज्ञों के नेतृत्व में आत्मरक्षा प्रशिक्षण सत्रों के माध्यम से व्यक्तिगत सुरक्षा पर जोर दिया गया, जिससे बच्चों में कौशल और आत्मविश्वास दोनों बढ़े।सीखने के अनुभव को एक अनूठा स्पर्श देते हुए, एक विशेष रूप से डिज़ाइन की गई मोबाइल प्रदर्शनी वैन (एमवी वैन) के अंदर सड़क सुरक्षा-थीम वाली फिल्म दिखाई गई। इस दृश्य और इंटरैक्टिव दृष्टिकोण ने छात्रों पर एक स्थायी छाप छोड़ी, जिससे कहानी और वास्तविक दुनिया के संदर्भ के माध्यम से सड़क सुरक्षा के महत्व को सुदृढ़ करने में मदद मिली।

रचनात्मक रंगमंच के माध्यम से बच्चों को सड़क सुरक्षा के साथ सशक्त बनाना

चल रहे समर कैंप पहलों के हिस्से के रूप में, लगभग 150 युवा छात्रों ने इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, लोधी रोड में राहुल खन्ना ग्रुप थिएटर के सहयोग से आयोजित सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम में भाग लिया। आकर्षक नाट्य प्रदर्शनों, कहानी सुनाने और संवादात्मक भूमिका निभाने के माध्यम से, सत्र का उद्देश्य बच्चों को यातायात नियमों, पैदल यात्रियों की सुरक्षा और सड़कों पर जिम्मेदार व्यवहार के महत्व के बारे में शिक्षित करना था। थिएटर समूह ने महत्वपूर्ण संदेशों को इस तरह से व्यक्त करने के लिए रचनात्मक तरीकों का इस्तेमाल किया जो युवा दर्शकों के लिए मनोरंजक और प्रभावशाली दोनों था। इस पहल ने शिक्षा को प्रदर्शन कलाओं के साथ सफलतापूर्वक जोड़ा, जिससे प्रतिभागियों पर सड़क पर सुरक्षित व्यवहार के महत्व के बारे में एक स्थायी छाप छोड़ी। इस कार्यक्रम में ट्रैफिक पुलिस के कई वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे

श्री जगन्नाथ एक्सप्रेस बस पुरी से देश के प्रमुख धार्मिक स्थलों तक जायेगा

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: पुरी जगन्नाथ धाम से देश के प्रमुख धार्मिक स्थलों तक जगन्नाथ एक्सप्रेस चलेगी। मोहन सरकार की एक साल की सालगिरह के मौके पर इस योजना की शुरुआत की जाएगी। ओडिशा राज्य सड़क परिवहन निगम ने इसके लिए तैयारियां शुरू कर दी हैं। ये बसें जिन जगहों पर जाएंगी, वे हैं:पूरी उज्जैन , पूरी अजोध्या , पूरी भिलाई , पूरी हैदराबाद , पूरी बिशाखापाटाना ,पुरी तिरुपति और भबानीपाटना हैदराबाद चलेगा ।

ऑटो चालक ने लापरवाही से टैक्सी को टक्कर मारी, घायल यात्री की हालत गंभीर

दिल्ली में एपीजे अब्दुल कलाम रोड पर एक ऑटो चालक ने लापरवाही से टैक्सी को टक्कर मार दी जिससे ऑटो में सवार यात्री गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने आरोपी ऑटो चालक को गिरफ्तार कर लिया है। घायल यात्री गौरव कुमार अशोका होटल में कैशियर है। वह लोक कल्याण मार्ग मेट्रो स्टेशन से ऑटो में जा रहा था जब यह हादसा हुआ।

नई दिल्ली। नई दिल्ली के एपीजे अब्दुल कलाम रोड पर एक ऑटो चालक ने लापरवाही से ऑटो चलाते हुए सड़क किनारे खड़ी टैक्सी को टक्कर मार दी। हादसे में ऑटो में बैठा यात्री घायल हो गया, जिसे गंभीर हालत में सफदरजंग अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

पुलिस ने आरोपी ऑटो चालक को गिरफ्तार कर लिया है, उसकी पहचान शाहबाद मोहम्मदपुर निवासी राजकुमार के रूप में हुई है। घायल यात्री की पहचान यूपी के बुलंदशहर निवासी गौरव कुमार के रूप में हुई है। फिलहाल तुगलक रोड पुलिस मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई कर रही है।

पुलिस अधिकारी के मुताबिक गौरव कुमार दिल्ली की निरंकारी कॉलोनी में किराए पर रहता है। वह अशोका होटल में कैशियर का काम करता है। 31 मई को दोपहर करीब 1:45 बजे वह लोक कल्याण मार्ग मेट्रो स्टेशन से ऑटो से होटल अशोका जा रहा था।

ईवी बस यूपी की सड़कों पर धूम मचाने को तैयार , डीजल बसों को किया कन्वर्ट , ऐसा करने वाला देश का पहला राज्य बना

परिवहन विशेष न्यूज

लखनऊ : उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम देश का पहला ऐसा निगम बनने जा रहा है, जहां पर डीजल बसों को इलेक्ट्रिक बसों में बदला जा रहा है. अभी तक ऐसा किसी भी राज्य में नहीं किया गया है. यूपीएसआरटीसी अब अपनी पुरानी डीजल बसों की नीलामी नहीं करेगा, बल्कि उन बसों को इलेक्ट्रिक बसों में तब्दील करेगा.

कानपुर की राम मनोहर लोहिया वर्कशॉप में दो बसें डीजल बस से इलेक्ट्रिक बस में तब्दील कर दी गई हैं. उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम ने इन बसों का ट्रायल भी शुरू कर दिया है. शुरुआती ट्रायल में यह बसें पास भी हो गई हैं.

परिवहन निगम डीजल बसों को नहीं करेगा नीलाम

500 डीजल बसों को इलेक्ट्रिक में बदलना टारगेट : ऐसी 500 डीजल बसों को इलेक्ट्रिक बसों में बदलने का टारगेट है. इसका फायदा ये होगा कि सड़क से डीजल बसें हटेंगी और प्रदूषण कम होगा. साथ ही परिवहन निगम का डीजल बसों की तुलना में इलेक्ट्रिक बसों को चलाने में खर्च भी कम आएगा और यात्रियों को बेहतर बस सुविधा भी मिल सकेगी.

उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम के बस बेड़े में करीब साढ़े 12 हजार बसे हैं. इनमें से साढ़े नौ हजार बसें परिवहन निगम की अपनी हैं और करीब 3000 बसें अनुबंध पर संचालित होती हैं. परिवहन निगम की अपनी फ्लीट की तमाम बसें सड़क पर चलने लायक नहीं बची हैं. उन्हें नीलाम करना है. परिवहन निगम 10 साल पुरानी और आठ लाख किलोमीटर तक चल चुकी बसों को बेड़े से हटकर नीलाम करता है, पर अब नीलामी के बारे में परिवहन निगम ने सोचना छोड़ दिया है.

झांसी-ललितपुर रूट पर इलेक्ट्रिक बसों का ट्रायल : परिवहन निगम के सीनियर अधिकारी बताते हैं कि उत्तर प्रदेश परिवहन निगम ने अपनी आठ साल पुरानी दो साधारण डीजल बसों को POC ट्रायल यानी (प्रूफ आफ कॉन्सेप्ट) के रूप में इलेक्ट्रिक बस में बदल दिया है. यह सारा काम परिवहन निगम की राम मनोहर लोहिया कार्यशाला कानपुर में किया गया है. वर्तमान में इन बसों का रोड ट्रायल किया जा रहा है और आरटीओ कार्यालय में ग्रीन प्लेट प्राप्त करने की प्रक्रिया चल रही है.

इन बसों का रिट्रोफिटमेंट कार्य कल्याणी पावर ट्रेन लिमिटेड और मेसर्स जीरो ट्वेंटी वन के सहयोग से किया जा रहा है. इन बसों को झांसी ललितपुर मार्ग पर संचालित किया जाएगा. अधिकारी बताते हैं कि इन बसों में रेट्रोफिटिंग का खर्च सहयोगी फर्म वहन करेगी और बस की नई बॉडी का निर्माण कार्य यूपीएसआरटीसी की तरफ से किया जा रहा है. इस परियोजना में करीब 90 लाख रुपए प्रति बस खर्च हो रहा है. अभी शुरुआत है आगे बसों को कन्वर्ट करने में खर्च और भी कम हो जाएगा.

कानपुर वर्कशाप में दो डीजल बसों को ईवी में बदला गया है.

क्या होगा इलेक्ट्रिक बसों से फायदा : उत्तर प्रदेश के कई ऐसे जिले हैं जिन्हें एनजीटी की तरफ से प्रदूषण के दायरे में रखा गया है. इन जिलों से दूसरे जिलों में संचालित होने वाली 10 साल पुरानी डीजल गाड़ियों को री रजिस्टर्ड करने की अनुमति भी नहीं है. ऐसे प्रदूषित जिलों में भी उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम की डीजल बसें संचालित होती हैं, जो प्रदूषण का बड़ा कारण बनती हैं.

यही कारण है कि अब इन डीजल बसों को परिवहन निगम इलेक्ट्रिक बसों में बदल रहा है. इलेक्ट्रिक बसों के संचालन से पर्यावरण में प्रदूषण फैलने की संभावना पूरी तरह खत्म हो जाती है. इससे लोगों को राहत की सांस मिल सकेगी. इसका एक बड़ा फायदा यात्रियों को भी मिलेगा कि वह इलेक्ट्रिक बस से सफर के दौरान बिना शोर के ही आरामदायक यात्रा पूरी कर सकेंगे.

परिवहन निगम को फायदा यह होगा कि डीजल की कीमतें लगातार आसमान छू रही हैं. इससे बसों का संचालन महंगा हो रहा है. यात्रियों पर किराए का बोझ भी पड़ रहा है. डीजल की तुलना में इलेक्ट्रिक बसों का प्रति किलोमीटर खर्च भी कम आएगा, जिससे रोडवेज को लाभ होगा. जब रोडवेज फायदे में होगा तो यात्रियों का किराया कम करने के बारे में भी विचार किया जाएगा. यानी यात्रियों की यात्रा भी सस्ती हो सकती है.

5000 नई इलेक्ट्रिक बसें भी बेड़े में होंगी शामिल : उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम अपने बस बेड़े में अब इलेक्ट्रिक बस बढ़ाने पर पूरा जोर दे रहा है. परिवहन निगम के बस बेड़े में अगले कुछ सालों में 5000 इलेक्ट्रिक बसें जोड़ने का प्लान है. काफी संख्या में अब तक इलेक्ट्रिक बसें परिवहन निगम की फ्लीट में जुड़ भी चुकी हैं. परिवहन निगम ने अपनी 120 इलेक्ट्रिक बसें खरीदी हैं, जिनमें 20 एसी इलेक्ट्रिक डबल डेकर बसें भी शामिल हैं.

देश में सबसे नई फ्लीट वाला राज्य बन जाएगा यूपी : यूपीएसआरटीसी के अफसर बताते हैं कि परिवहन निगम के बस बेड़े में लगातार नई बसें जुड़ रही हैं. चाहे साधारण बसें हो, एसी बसें हों या फिर साधारण इलेक्ट्रिक और एसी इलेक्ट्रिक बसें. आने वाले कुछ ही सालों में उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम की बसों का बेड़ा देश में सबसे नया हो जाएगा. अभी तक इस मामले में गुजरात ही यूपी से आगे है, लेकिन अब जल्द ही यूपी ऐसा पहला राज्य होगा जिसकी बसें देश में सबसे नई होंगी.

क्या कहते हैं यूपीएसआरटीसी के एमडी : उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम के प्रबंध निदेशक मासूम अली सरवर का कहना है कि परिवहन निगम में बहुत सारे ऐसे काम हुए हैं जो की पायनियर हैं. यानी देश में पहली बार हुए हैं. परिवहन निगम में सबसे पहले अनुबंधित बसों का लगाया जाना यानी पीपीपी जिसे पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप कहते हैं इसके बारे में किसी को पता नहीं था. हम लोग 1980 के दशक से पीपीपी पर काम कर रहे हैं.

आज की डेट में जितना भी बास्केट ऑफ फ्यूल्स है चाहे डीजल, सीएनजी, इलेक्ट्रिक और अब हम प्रयास कर रहे हैं कि हाइड्रोजन की गाड़ियां भी चलाएं. हमारे अधिकारियों का यह मंतव्य था कि इलेक्ट्रिक नई बसें जो आती हैं उनकी कास्ट ज्यादा होती है. कोई ऐसी व्यवस्था हो जिससे की कास्ट भी कम हो जाए, साथ ही साथ हम इलेक्ट्रिक बसों को भी चला सकें।

श्री हनुमत शक्ति मंत्र प्रयोग

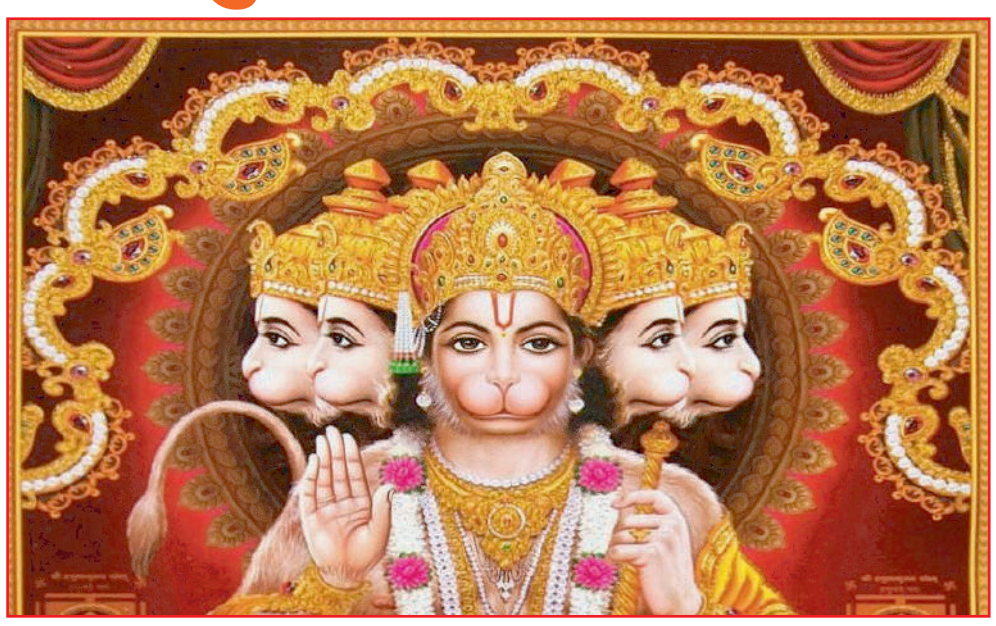

हमारे सनातन धर्म मे रुद्रा अवतार हनुमान सदैव विराजमान है, मनुष्य हो या देवी, देवता सभी के कार्य को सम्पन्न करते है हनुमान जी। राम भक्त, दुर्गा भक्त हो या शिव भक्त, सभी मार्गो मे परम सहायक होते है हनुमान।

ये शिव अंश भी, शिव पुत्र भी है राम के भक्त भी वही सीता के पुत्र हैं।ये कपि मुख है, वही पंचमुख, सप्तमुख, और ग्यारहमुख धारण करने वाले है।ये सभी जगह सूपूजित है कारण ये संकटमोचन है।माता, पिता के लिए अपने संतान से प्यारा कोई नही होता ,जैसै गौरी पुत्र गणेश है, वही शिवांश देवी पुत्र बटुक भैरव है वही शिवांश राम भक्त हनुमान जी है।

कहा गया है कि बिना गुरु ज्ञान नही होता है वही बिना कुल देवता के कृपा बिना किसी अन्य देव की कृपा प्राप्त नहीं होती है।

प्रथम श्री गणेश को स्मरण पूजन किए बिना पूजा प्रारम्भनहीं होता हैं।

महाविद्या की साधना करनी हो, वहाँ बिना बटुक कृपा आगे बढ़ना कठिन है।

असली माता पिता के पास ये पुत्र ही पहुँचा सकते है, परन्तु अपने इस जीवन के माता पिता की सेवा तथा आदर किए बिना यह संभव ही नहीं है।

जीवन के बाधा, संकट का निवारण न हो तो धर्म मार्ग में बढ़ना दुष्कर है।

मूर्ति पूजा हो या निंरकार, परन्तु सत्य यही है कि परमात्मा एक हैं, तभी तो कहा गया है कि सत्यम, शिवम, सुन्दरम।

सत्य ही शिव है, शिव ही सुन्दर है बाकी सब गौण।एक शिव ही सृष्टि में सत्य है, वही क्रिया शक्ति, चित शक्ति एवं इच्छा शक्ति के रुप में अर्धनारीश्वर है, शिव के बायें भाग में शक्ति हैं, वही शिव के एक रुप है हरि हरात्मक आधा शिव आधा विष्णु, ये शिव की अलग अलग लीला एंव रुप है।शिव सुन्दर है वही उनकी शक्ति सुन्दरी के नाम से विख्यात है, फिर तो शिव के द्वारा रचित श्री रामायण का हनुमत कान्ड को उन्होंने सुन्दर कान्ड का नाम रखा, यह विशेष रहस्यपूर्ण है।

सुन्दर कान्ड के प्रत्येक श्लोक का अर्थ समझेगे तो उस शिव के सुन्दर रुप का मर्म समझ में आ जायेगा।सुन्दर कान्ड का पाठ जहाँ होता है सारे अभाव, पाप, रोग विकार स्वतःनष्ट होने लगता है, हमे सिर्फ पूर्ण श्रद्धा से होकर पाठ करना चाहिए।

पाठ से पूर्व हमें क्या करना चाहिए यह भी महत्वपूर्ण है। सुन्दर कान्ड मे शिवशक्ति, सीताराम, वरदान, बल, धन, शुभ, दमन, अहंकार का विसर्जन, भक्ति की परकाष्टा, प्रेम, मिलन विश्वास, धैर्य, बौद्धिक विकास क्यों नहीं प्राप्त किया जा सकता हैं।

हमारे हनुमान जी वे सत्यम शिव के सुन्दर, लीलाधर हैं, सभी उनके कृपा से प्राप्त हो जाता है।हनुमत उपासना व्यापक है, हर कार्य सुलभ है।

प्रथम गुरु, गणेश का पूजन कर राम परिवार ऋषि पूजन कर हनुमत उपासना करने से ही पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

यहां हनुमत का विशेष पाठ प्रयोग लिख रहा हूँ, जो चमत्कारिक है और पूर्ण फल प्रदान करनें मे सक्षम ।

श्री रामायण के प्रथम रचनाकार शिव है फिर ऋषि बाल्मिकी, फिर गोस्वामी तुलसीदास जी है ।मंत्र कवच के ऋषि देवता भिन्न भिन्न है।बजरंग बाण जो प्राप्त होता है वह भी अधुरा हैं।फिर भी लोगों को लाभ मिलता है। एक एक अक्षर शक्ति सम्पन्न है।श्री हनुमान जी शिवांश है परन्तु वैष्णव परिवार से है इस कारण इनके पूजा में मांस, मदिरा, स्त्री भोग वर्जित है।

गृहस्थ आश्रम के भक्त इन्हें अधिक प्रिय है परन्तु साधना काल में नियम का पालन अवश्य करे।

स्त्री भक्त मासिक धर्म में इनकी साधना न करें।

श्री हनुमान चालीसा बहुत प्रभावी एवं प्रचलित हैं, शनिग्रह से प्रभावित हो या राहुकेतु से भूत पिशाच हो या रोग व्याधि नित्य१, ,७,११,२१, १,५१,१०८ बार पाठ करने से कामना पूर्ण होती है।यह परिक्षित है।

श्री शिव पार्वती सहित गणेश नमस्कार कर, सीताराम, सपरिवार का ध्यान कर श्री गोस्वामी तुलसीदास जी को प्रणाम करे, ।

विशेष लाभ के लिए तिल का तेल और चमेली का तेल मिलाकर लाल बती का दीपक लगा लें,

पूर्व, उतर मुख करके थोड़ा गुड़, का लड्डू या किशमिश का प्रसाद अर्पण कर पाठ आरम्भ करें।

इससे अवश्य कामना या संकट का निवारण होता है।

हरी (छोटी) इलायची खाना किन बीमारियों में सहायक है ?

नशीले पदार्थों की रोकथाम अभियान में पालिका - भागीदारी के लिए समिति अध्यक्ष विजय गौड़ मिले पालिका अध्यक्ष केशव चंद्र आईएएस से। आयोजन में पालिका-सहयोग एवं प्रोत्साहन सचमुच ड्रग फ्री दिल्ली 2027 के सपनों को साकार करने का सशक्त माध्यम बनेगा और माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, माननीय केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह और दिल्ली के माननीय उपराज्यपाल के दूरदर्शी नेतृत्व के प्रति आस्था का परिचय देगा। राष्ट्रीय नुक्कड़ प्रतियोगिता के रोमांचक कार्यक्रम में नई दिल्ली नगर पालिका परिषद के विद्यालयों के बच्चों को नुक्कड़ नाटक देखने के लिए आमंत्रित किया जाएगा, । पालिका के शिक्षा विभाग को प्रमुख भागीदारी के लिए आमंत्रित किया गया।)

इलायची का सेवन आप कई तरह से कर सकते हैं। आप इसे माउथ फ्रेशनर के रुप में सीधे चबाकर खा सकते हैं। कोई डिश या सब्जी बनाते समय उसमें इसके दाने डालकर इसका सेवन कर सकते हैं। इसके अलावा इलायची पाउडर को किसी भी डिश में या दूध में डालकर इसका सेवन कर सकते हैं।

आयुर्वेदिक विशेषज्ञों के अनुसार, एक दिन में आधा से एक ग्राम इलायची पाउडर का सेवन करना उपयुक्त है। अगर आप किसी बीमारी के घरेलू उपाय के रुप में इलायची का सेवन करना चाहते हैं तो इसकी उचित खुराक के लिए आयुर्वेदिक चिकित्सक से संपर्क करें।

बहुत से लोग यह जानना चाहते हैं कि इलायची खाने से सेहत को कुछ फायदा होता भी है या नहीं? आपकी जानकारी के लिए बता दें कि इलायची के फायदों (Elaichi ke fayde in hindi) की लिस्ट काफी लम्बी है और अगर आप नियमित रुप से इलायची की उचित खुराक का सेवन कर रहे हैं तो निश्चित तौर पर यह आपको स्वस्थ रखने में मदद करती है।

1 पाचन से जुड़ी समस्याओं से राहत

खराब खानपान और जीवनशैली के कारण आजकल हर कोई अपच, गैस, एसिडिटी और कब्ज जैसी समस्याओं से पीड़ति रहता है। ऐसे में कुछ घरेलू उपाय आपकी इन समस्याओं को काफी हद तक कम कर सकते हैं। कब्ज़ और एसिडिटी दूर करना भी इलायची के फायदे (Elaichi ke fayde) में शामिल है। इलायची में ऐसे पोषक तत्व होते हैं जो पाचन तंत्र को दुरुस्त रखते हैं और पेट की जलन को कम करते हैं। जिससे एसिडिटी, अपच जैसी समस्याओं से आराम मिलता है।

2 हिचकी से आराम

अक्सर ऑफिस में काम करते समय या किसी से बात करते समय अचानक से हिचकी (Hiccups) आने लगती है और उस समय आपको समझ ही नहीं आता कि हिचकी से कैसे आराम पाएं। आपको बता दें कि ऐसी हालत में इलायची आपके लिए काफी कारगर साबित हो सकती है। अगली बार जब हिचकी आये तो एक इलायची मुंह में डालें और कुछ देर तक उसे धीरे धीरे चबाते रहें, इससे हिचकी जल्दी बंद हो जाती है।

3 सर्दी-खांसी और गले की खराश से आराम

मौसम बदलने पर या किसी तरह के संक्रमण की वजह से अक्सर लोग सर्दी-खांसी की चपेट में आ जाते हैं। कमजोर इम्युनिटी क्षमता वाले लोग बहुत जल्दी सर्दी की चपेट में आते हैं। सर्दी होने पर गले में खराश होने लगती है। इलायची का सेवन खांसी और गले की खराश से आराम दिलाने में फायदेमंद होता है। यही कारण है कि खांसी और सर्दी-जुकाम दूर करने की सबसे प्रमुख आयुर्वेदिक औषधि सितोपलादि चूर्ण में भी इलायची मौजूद होती है।

खराश

गले की खराश दूर करने के लिए रात को सोने से पहले आधा से एक ग्राम इलायची चूर्ण (Cardamom in hindi) को शहद के साथ मिलाकर खाएं। दो तीन दिन इसका सेवन करने से गले की खराश ठीक हो जाती है।

4 ब्लड प्रेशर कम करने में मदद

एक अध्ययन के अनुसार, इलायची का रोजाना सेवन करने से ब्लड प्रेशर में कमी आती है। इस लिहाज से देखें तो जो लोग हाई ब्लड प्रेशर या हाइपरटेंशन के मरीज हैं उन्हें इलायची का नियमित सेवन करना चाहिए। इसमें मौजूद पोटैशियम और मैग्नीशियम जैसे खनिज पदार्थ ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखने में मदद करते हैं।

5 अस्थमा

वैसे देखा जाए तो इलायची खाने के फायदे

बहुत ज्यादा हैं। ब्लड प्रेशर कम करने और गले की खराश से आराम दिलाने के अलावा यह अस्थमा के मरीजों के लिए भी बहुत उपयोगी औषधि है। इलायची में ऐसे गुण पाए जाते हैं जो फेफड़ों में खून के प्रवाह को ठीक रखते हैं जिससे फेफड़े स्वस्थ रहते हैं और खांसी या अस्थमा जैसी बीमारियों से बचाव होता है।

6 भूख बढ़ाने में मदद

इलायची पाचन तंत्र को दुरुस्त रखती है जिस वजह से शरीर का मेटाबोलिज्म भी ठीक ढंग से काम करता है और भूख बढ़ती है। जिन लोगों को समय पर भूख ना लगने या कम लगने की समस्या है उन्हें इलायची (Cardamom) का सेवन करना चाहिए।

7 मुंह की दुर्गंध दूर करने में सहायक

इलायची खाने के फायदे की बात की जाए तो हर किसी का जवाब यही होता है कि इससे मुंह की बदबू दूर होती है। यह बात पूरी तरह सच है और इसीलिए इलायची (Cardamom) का सबसे ज्यादा उपयोग माउथ फ्रेशनर के रूप में किया जाता है। अगर आप भी मुंह की बदबू से परेशान हैं तो इलायची के कुछ दाने ज़रुर खाएं।

8 उल्टी और मिचली से राहत

कुछ शोधों में इस बात की पुष्टि हुई है कि इलायची, सर्जरी के बाद आने वाली मिचली और उल्टी की समस्या से राहत दिलाती है। रिसर्च के अनुसार इलायची, अदरक और पुदीने को कॉटन की पट्टी में लपेटकर इसे सूंघने से सर्जरी के बाद होने वाली मिचली से आराम मिलता है। इसी तरह जिन लोगों को पहाड़ी रास्तों पर सफ़र के दौरान उल्टी या मिचली की समस्या होती है उन्हें सफर शुरु करने से पहले इलायची के कुछ दाने खाने चाहिए। यह मिचली और उल्टी रोकने का सबसे आसान घरेलू उपाय है।

9 नपुंसकता दूर करने में सहायक

बहुत कम लोग यह जानते हैं कि छोटी इलायची खाने से नपुंसकता दूर करने में मदद मिलती है। इलायची में कामोत्तेजक गुण होते हैं और यह पुरुषों और महिलाओं दोनों की सेक्स की इच्छा बढ़ाने में मदद करती है। अगर आपकी सेक्स लाइफ नीरस हो गई है तो आप भी इलायची (Cardamom) का सेवन शुरु करें और अपनी सेक्स लाइफ को बेहतर बनाएं।

10 तनाव दूर करने में फायदेमंद

इलायची की सुगंध आपके मूड को तरोताजा बनाये रखती है। इसीलिए अधिकांश लोग सुबह सुबह इलायची की चाय (Cardamom tea) का सेवन करते हैं। इलायची की चाय पीने से पेट और सांसो से जुड़े रोगों से तो छुटकारा मिलता ही है साथ ही ये तनाव को दूर करती है और मूड को फ्रेश बनाये रखती है। इसलिए स्ट्रेस या डिप्रेशन के मरीजों को स्ट्रेस भगाने के लिए रोजाना इलायची वाली चाय ज़रुर पीनी चाहिए।

अगर आपको किसी बीमारी का इलाज करवाना हो तो आप बीमारी के बारे में बताकर या परेशानी के बारे मे बता कर आयुर्वेदिक औषधियां मंगवा सकते हैं।..

किसी भी जानकारी के लिए या ट्रीटमेंट के लिए आप पहले हमें अपनी प्रॉब्लम व्हाट्सप्प कर दीजिये समय मिलते ही आपको जवाब दिया जायेगा...

सभी सुखी और निरोगी रहे

मंगलवार को हनुमानजी का दिन होता है। जिसे हनुमान जी का आशीर्वाद मिल गया तो समझो उसके सारे काम हो गए। मंगलवार को करें यह टोटके/उपाय, बन जाएगा बिगड़ा काम।

मंगलवार के टोटके/उपाय

1. आप मंगलवार के दिन राम मंदिर में जाएं और दाहिने हाथ के अंगुठे से हनुमान जी के सिर से सिंदूर लेकर सीता माता श्री चरणों में लगा दें इससे आपकी हर मनोकामना पूरी हो जाएगा।

2. मंगल के दिन सुबह के दिन एक धागे में चार मिर्चें नीचे डालकर उसके ऊपर नींबू डालें और फिर उसके ऊपर तीन मिर्चें और लगाए। इसके बद इसे घर और व्यवसाय के दरवाजे पर लटका दें। इससे नकारात्मकता खत्म हो जाएगी और सकारात्मकता का संचार होगा।

3. मंगलवार के दिन पीपल के 11 पत्ते लेकर साफ जल से धो लें। इन पत्तों पर चंदन या कुमकुम से प्रभु श्रीराम का नाम लिखें। इसके बाद हनुमान जी के मंदिर में जाकर इन पत्तों को अर्पित कर दें। इससे जीवन के दुख कम होंगे।

4. प्रत्येक मंगलवार को नजदीकी मंदिर में जाकर हनुमान जी को बनारसी पान अर्पित करें। ऐसा करने से आपके जीवन में हमेशा हनुमान जी की कृपा बनी रहेगी और आपके सभी काम बनते रहेंगे।

5. मंगलवार को सुबह लाल गाय को रोटी देना शुभ है।

6. मंगलवार को हनुमान मंदिर या गणेश मंदिर में नारियल रखना अच्छा माना जाता है।

7. मिटटी के बर्तन में हनुमान जी को बूंदी का भोग लगाये , फिर गरीबो को दान कर दे

8. मंगलवार को हनुमान मंदिर में तुलसी का पत्ता चढ़ाए

9. राम लिखी लाल रंग की ध्वजा मंगलवार को हनुमान जी को चढ़ाए

10. मंगलवार के दिन लाल चंदन, लाल गुलाब के फूल तथा रोली को लाल कपड़े में बांधकर एक सप्ताह के लिए मंदिर में रख दें. एक सप्ताह के बाद उनको घर की तथा दुकान की तिजोरि में रख दें

11. प्रत्येक मंगलवार को बच्चे के सिर पर से कच्चा दूध 11 बार वार कर किसी जंगली कुत्ते को शाम के समय पिला दें

12. सुबह सूरज उगने के समय एक गुड का डला लेकर किसी चौराहे पर जाकर दक्षिण की ओर मुंह करके खडे हो जांय ! गुड को अपने दांतों से दो हिस्सों में काट दीजिए ! गुड के दोनो हिस्सों को वहीं चौराहे पर फेंक दें और वापिस आ जांय

13. लगातार आठ मंगलवार हनुमान जी के मंदिर एक नारियल ले कर जाये उसके सिंदूर से स्वस्तिक बनाये हनुमान जी को अर्पित कर वहां बैठ कर ऋणमोचक मंगल स्तोत्र का पाठ करे

14. मंगलवार के दिन एक साबुत पानी वाला नारियल लेकर उसे बीमार व्यक्ति के सिर पर से 21 बार उसार कर किसी मंदिर की आग में डाल दें। साथ ही हनुमानजी की प्रतिमा को चोला चढ़ाकर हनुमानचालिसा पढ़े।

साधुओं के अचूक आयुर्वेदिक प्रयोग :--

1- मधुमक्खी काटने की औषधीय ---

आक (मदार) के दूध में लौंग, गोल मिर्च, शुद्ध कड़वा तेल या सरसों का दाना एक में रगड़कर तेल में फेंटकर लगाये पीड़ा समाप्त हो जायगी।

2- मनुष्य के पेट में दर्द -----

आकाश बवर पीसकर थोड़ा शुद्ध घी एक चम्मच जल के साथ पिला दिया जाय दर्द मिट जायगा।

3- जहर खा लेने पर ------

अंकोल की छाल को, थोड़ा-सा पीसकर पिला दिया जाय, तो कैसा भी विष हो उसे उलटी द्वारा बाहर निकाल देता है। यह औषधी रामबाण है।

4- वातरोग या गठिया -----

हरसिंगार की चार या पाँच पत्ती पीसकर एक गिलास पानी से सुबह-

शाम दो या तीन सप्ताह पीने से रोग समाप्त हो जायगा।

5- कान का दर्द ------

पीपल के पत्ते का रस, कान में डालने से कान का दर्द, बहना तथा बहरापन चला जाता है।

6- चौथिया, जड़ेया बुखार ------

कपास के पत्तों को सूंघने से, चौथिया या जडैया बुखार जड़ से छूट जायगा।

7- सिरदर्द या सर्दी ------

पीपल के चार कोमल पत्तों का रस चूसिये। रस चूसते - चूसते दर्द या सर्दी जुक़ाम मिट जायगा।

8- खाँसी, दमा -----

पीपल के सूखे पत्तों को कूटकर, कपड़छान कर ले तथा एक बड़े चम्मच शुद्ध मधु 25 ग्राम में, 25 ग्राम पीपल पत्ते का चूर्ण, मिलाकर चाटने से खाँसी, दमा दो सप्ताह में, जड़ से समाप्त हो जायगा।

9- पीपल के फल के उपयोग ------

पीपल के फल को , सुखाकर व कूटकर कपड़े से छान कर ले। 250 ग्राम नित्य गाय के दूध में मिलाकर सेवन करने से वह बल-वीर्य को बढ़ाता है, ताकत पैदा करता है और स्त्रियों के प्रसूत, प्रदर, मासिक धर्म की गड़बड़ी को भी यह दूर कर देता है।

10- हैजा ------

अकवन (आक)-को, कुछ लोग मदार भी कहते हैं। अकवन की जड़ 100 मिलीग्राम, इतनी ही गोल मिर्च मिलाकर पीस ले और मटर के दाने के बराबर गोली बना ले। जिसे हैजा (कॉलरा) हो गया हो, उसे एक बार, दो गोली खिलाये, हैजा तुरंत - बंद हो जायगा।

यह साधु समाज के प्रयोग है जो सिद्ध योग के अंतर्गत आते है। फिर भी सेवन करते समय, किसी आयुर्वेद चिकित्सक व वैद्य के दिशा-निर्देश पर ही लेना व्यवहारिकता है।

कोरोना को हराने के लिए अपना साथ और सहयोग प्रदान करें- डॉ एमपी सिंह

कोविड-19 के कोऑर्डिनेटर और सिविल डिफेंस केचीफ वार्डन डॉ एमपी सिंह ने चिंता जाहिर करते हुए कहा है कि कोविड का फिर से आगमन हो रहा है और दिन प्रतिदिन केस बढ़ते ही जा रहे हैं सलिए हमें सतर्क रहना होगा और निम्नलिखित सावधानियां बरतनी होगी -

1.सुबह उठकर लौंग एवं औरतुलसी की चाय का सेवन करें या सौंठ, अजवाइन, इलायची, लौंग, दालचीनी का काढ़ा बनाकर पीएं।

2.गुनगुना पानी पीएं या उबालकर पानी बोतल में रख लें और बार-बार धीमे-धीमे पीते रहे।

3.फ्रिज में रखी वस्तुओं का सेवन न करें।

4.ऐ सी का प्रयोग उचित नहीं है इसलिए बिना ए सी रहना सीख लें ।

5.प्रतिदिन सुबह धूप अवश्य लें।

6.सरसों का तेल प्रतिदिन नाभि और नाक में अवश्य लगाएं।

7.खाली पेट ना रहें।

8.दूध में हल्दी मिलाकर पीएं ।

9.आवले का मुरब्बा एवं आवले की चटनी बनाकर खाएं।

10.नींबू एवं संतरे का सेवन करें।

11.अनायास घर से बाहर ना निकलें।

12.रेस्तरां, कैफे, शॉपिंग मॉल एवं सिनेमा हॉल जाने से बचें।

13.घूमने फिरने के लिए सार्वजनिक स्थानों पर ना जाए।

14.यात्रा करने से परहेज करें।

15.मास्क लगाकर रखें।

16.आपस में समाजिक दूरी बनाए रखें।

17.बार-बार हाथों को सेनीटाइज करते रहे।

18.भीड़भाड़ वाले स्थान पर जाने से बचें।

19.संतुलित और पौष्टिक भोजन लें।

20.पर्याप्त नींद लें।

21.नियमित व्यायाम करें।

22.खाली पेट ना रहें।

प्रत्येक व्यक्ति मृत्यु से भयभीत हैं। पूछने पर सभी कहतें हैं कि जब यह अटल सत्य है तो डरने जैसा क्या है?

ध्यान रहे कि हम कहने में कुछ है और भीतर कुछ और चल रहा है। छोटी छोटी चीज के खो जाने, चले जाने पर हम गमजदा हो जातें हैं, विक्षिप्त /डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं तो सोचें कि यह समस्त संसार हमसे इस शरीर के माध्यम से जुड़ा हुआ है। जब यह शरीर खोने लगेगा तो एक-एक चीज़, एक-एक व्यक्ति, साजो-सामान, पद-प्रतिष्ठा, नाम-रूप के लिए, उसके खोने की हमारी पीड़ा का तो कोई पारावार ही नहीं होगा। छोटी सी अंगुली कट-छिल जाने पर हमारी गहरी पीड़ा की अनुभूति, हम भुलाये नहीं भूल पाते, तो समस्त शरीर से निकलने की पीड़ा कितनी गहनभूत होगी? सोच ही नहीं सकते। इस शरीर के माध्यम से ही इस संसार से हम डील करते हैं। स्वाद, गंध, छुवन, सुनना-समझना एक क्षण में छूट जायेगा, का भाव हमारी छोटी सी बुद्धि में समा नहीं सकता। वास्तव में यह सब इसलिए है क्योंकि हम इस शरीर को जीते ही नहीं हैं। इस जिंदगी को यदि हम पहले और अंतिम दिन जैसी जागरूकता से साथ अभी और यहीं, जीना शुरू कर दें तो हम इस अद्भुत जीवन को संपूर्णता से जी भी पायेंगें और इससे चिपकाव-दुराव दोनों ही विलीन हो जायेंगें। तब हम न तो बेहोश जीयें होंगे और न ही बेहोश मरेंगें।

दिल्ली से हार कर पंजाब भागे मनीष सिसोदिया का आज ब्यान देखकर दिल्ली वाले स्तब्ध हैं : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की पटपड़गंज छोड़कर जंगपुरा से हार कर दिल्ली से भाग कर पंजाब में जा बसे पूर्व मंत्री मनीष सिसोदिया का आज दिल्ली के विषय में ब्यान देखकर दिल्ली वाले स्तब्ध हैं।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की बारापूला नाले पर बसे मद्रासी कैम्प के कारण नाले की सफाई का काम गत लगभग एक दशक से रूका हुआ था और इससे आसपास के क्षेत्र ही नही मीलों तक जलजमाव होता था। गत लगभग एक वर्ष से तत्कालीन अरविंद केजरीवाल एवं आतिशी मार्लेना सरकारों के संज्ञान में मद्रासी कैम्प शिफ्ट होने का मसला था पर तब ₹आपऱ नेता एक शब्द नही बोले, ना ही डयूसिब के माध्यम से इनके पुनर्वास की कोई योजना बनाई और आज मगरमच्छी आंसू बहा रहे हैं।

सचदेवा ने कहा है की भाजपा जहां झुग्गी वहीं मकान की घोषित योजना के प्रति कटिबद्ध है पर ₹आपऱ नेता बतायें की कुछ वर्ष पूर्व मजबूरी वश यदि लोगों ने नाले किनारे या नाले को ढक कर असुरक्षित झुग्गी घर बना लिए थे तो क्या किसी संवेदनशील सरकार को झुग्गी वालों को सुरक्षित एवं बेहतर घर देने चाहिए या पुनः नाले पर घर बना कर देने चाहिए।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की खेदपूर्ण है की ₹आपऱ नेता हो कांग्रेस नेता इन्होने झुग्गी वालों को कभी बेहतर जीवन देने के लिए काम नही किया हमेशा इनको वोट बैंक बना कर रखा और अमानवीय परिस्थितियों में जीने को मजबूर किया।

फुटपाथ पर कबूतरों को दाना डालना सेहत के लिए खतरनाक, 13 साल के बच्चे की याचिका पर एनजीटी सख्त

दिल्ली में फुटपाथों पर कबूतरों की बीट से गंदगी के खिलाफ याचिका पर एनजीटी ने दिल्ली सरकार से जवाब मांगा है। 13 वर्षीय याचिकाकर्ता ने दाना खिलाने से कबूतरों की बढ़ती संख्या और इससे बीमारियों पर चिंता जताई है। एनजीटी ने एमसीडी व पीडब्ल्यूडी को नोटिस भेज जवाब मांगा है।

नईदिल्ली: फुटपाथों पर कबूतरों की गंदगी के खिलाफ एक 13 वर्षीय स्कूली बच्चे की याचिका पर नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने दिल्ली सरकार सहित अन्य से जवाब मांगा है।

एनजीटी चेयरमैन न्यायमूर्ति प्रकाश श्रीवास्तव की अध्यक्षता वाली पीठ ने दिल्ली सरकार, दिल्ली नगर निगम (एमसीडी), लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) को नोटिस जारी कर हलफनामा दाखिल करने का आदेश दिया है।

मामले की सुनवाई आठ अक्टूबर तक के लिए स्थगित करते हुए पीठ ने कहा कि पर्यावरण नियमों के अनुपालन के संबंध में याचिका में उठाए गए मुद्दे पर विचार करने की जरूरत है।

कबूतरों से हो रही हाइपरसेंसिटिविटी न्यूमोनाइटिस की बीमारी

याचिकाकर्ता अरमान पालीवाल की तरफ से पेश हुए अधिवक्ता आशीष जैन ने कहा कि फुटपाथ पर कबूतरों को खिलाने के कारण उनकी संख्या बढ़ी है।

अधिवक्ता आशीष जैन ने आरोप लगाया है कि फुटपाथ पर बड़ी मात्रा में कबूतरों की बीट हर दिन सुबह सफाई कर्मचारियों के झाड़ू लगाने से हवा में घुल जाती हैं।

हवा में मिले इसके विषैले कण सांस लेने पर लोगों के अंदर जाते हैं और फेफड़ों की हाइपरसेंसिटिविटी न्यूमोनाइटिस जैसी गंभीर बीमारियों को जन्म देते हैं। जिससे फेफड़ों में जख्म हो जाता है।

कबूतरों की बीट में होते हैं खतरनाक बैक्टीरिया

उन्होंने दावा किया कि एक साल में एक कबूतर 12 से 15 किलो बीट करता है और दिल्ली में 25 लाख से अधिक कबूतर हैं।

उन्होंने यह भी दावा किया कि वैज्ञानिक अध्ययन के अनुसार कबूतरों की बीट में खतरनाक बैक्टीरिया होते हैं। जिनसे फूड-प्वाइजनिंग होने का खतरा रहता है।

कबूतरों को फुटपाथ पर दाना डालने पर जुर्माना लगाने की मांग

याचिकाकर्ता अरमान पालीवाल ने कहा कि उनकी शिकायत कबूतरों की संख्या से न होकर फुटपाथ पर अवैध तरीके से कब्जा करके उनके खाने के लिए दाना बेचने वालों हैं।

इसी के कारण लोग वहां पर रुककर कबूतरों को खाना खिलाते हैं और इससे न सिर्फ स्वास्थ्य की समस्या होती है, बल्कि यातायात की समस्या भी होती है।

एमसीडी और पीडब्ल्यूडी ने शिकायत पर नहीं की कार्रवाई

इस संबंध में एमसीडी व पीडब्ल्यूडी को शिकायत की गई, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। याचिका में मांग की गई कि इस संबंध में जुर्माना लगाने का प्रविधान किया जाए।

इसके लिए उन्होंने तर्क दिया कि मुंबई व पुणे जैसे शहरों में जुर्माना लगाने का प्रविधान है। उन्होंने इस संबंध में नीति बनाने का निर्देश देने की भी मांग की।

दिल्ली में साइबर ठगी और सेक्सटॉर्शन गिरोह का भंडाफोड़, 15 आरोपी गिरफ्तार

क्राइम ब्रांच ने साइबर ठगी और सेक्सटॉर्शन गिरोह का भंडाफोड़ करते हुए 15 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इनमें फर्जी लोन दिलाने के नाम पर ठगी करने वाले बैंक खाते मुहैया कराने वाले और सेक्सटॉर्शन गिरोह के सदस्य शामिल हैं। पुलिस ने इनके पास से मोबाइल फोन सिम कार्ड लैपटॉप और अन्य सामान बरामद किया है। पांच करोड़ रुपये से अधिक की मनी ट्रेल का भी पता चला है।

नई दिल्ली। दिल्ली क्राइम ब्रांच ने साइबर ठगी और सेक्सटॉर्शन रैकेट में शामिल 15 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इनमें से सात आरोपी फर्जी लोन दिलाने के नाम पर ठगी करने वाले, तीन बैंक खाते मुहैया कराने वाले और पांच सेक्सटॉर्शन गिरोह के सदस्य हैं। इनका आपराधिक नेटवर्क राजस्थान, दिल्ली और उत्तर प्रदेश में फैला हुआ है।

पुलिस ने इनके पास से 28 मोबाइल फोन, 30 सिम कार्ड, दो लैपटॉप, आठ चेक बुक, 15 डेबिट कार्ड और एक किआ सोनेट कार बरामद की है। साथ ही पीड़ितों को ब्लैकमेल करने के लिए इस्तेमाल किए गए 67 वीडियो और 377 फोटो भी मिले हैं। पुलिस ने जांच में पांच करोड़ रुपये से अधिक की मनी ट्रेल का भी पता लगाया है।

स्टाइल ,मजबूती और परफॉर्मेंस का बेहतरीन मेल

मुख्य संवाददाता

रसोई उपकरणों की अग्रणी कंपनी टीटीके प्रेस्टीज ने अपने नवीनतम उत्पाद सेराग्लाइड ड्यूओ सिरेमिक कुकवेयर को बड़े गर्व के साथ लॉन्च किया है। यह आधुनिक सिरेमिक कुकवेयर नई टेक्नोलॉजी और खूबसूरत डिजाइन का मेल है, जो आज की मॉडर्न रसोई के लिए एक ज़रूरी उपकरण बन सकता है। तेज़ पकाने की क्षमता और बेहतरीन टिकाऊपन के साथ सेराग्लाइड ड्यूओ घरेलू और पेशेवर रसोइयों के लिए कुकवेयर की परिभाषा ही बदल देता है।

सेराग्लाइड ड्यूओ रेंज तेज़ तापमान पर भी बेहतर ढंग से काम करती है, जिससे इसकी कार्यक्षमता और हीट होल्डिंग क्षमता दोनों बढ़ती है। इसकी सिरेमिक कोटिंग में पीएफओए और पीएफएएस जैसे हानिकारक रसायन नहीं होते, जिससे यह पारंपरिक नॉन-स्टिक कुकवेयर की तुलना में अधिक सेहतमंद कुकिंग अनुभव देता है।

इसकी मजबूत परत इसे रोज़मर्रा के उपयोग में भी लंबे समय तक टिकाऊ बनाती है। यह परत काले धब्बों और फीकेपन से भी बचाव करती है। नियमित इस्तेमाल के बावजूद इसकी गुणवत्ता पर असर नहीं पड़ता, क्योंकि इसका डिज़ाइन इसे लंबे समय तक उपयोग में लायक बनाता है।

यूजर्स अपनी जरूरत के अनुसार गैस या इंडक्शन कुकटॉप का इस्तेमाल कर सकते हैं, क्योंकि सेराग्लाइड ड्यूओ कुकवेयर इन दोनों ही हीट सोर्सेस के साथ आसानी से काम करता है। इसमें दिए गए कूल-टच हैंडल इसे सुरक्षित तरीके से पकड़ने में मदद करते हैं और खाना बनाते समय हाथ जलने से बचाते हैं। इसकी नॉन-स्टिक और चिकनी सतह पर दाग-धब्बे नहीं जमते, जिससे इसे साफ करना बेहद आसान हो जाता है। यह कुकवेयर न केवल रसोई के काम को आसान बनाता है, बल्कि अपनी कीमत के अनुपात में शानदार उपयोगिता भी देता है।

सेराग्लाइड ड्यूओ कलेक्शन में उन सभी बर्तनों की रेंज है जो किसी भी भारतीय रसोई के लिए जरूरी हो सकते हैं। इसमें फ्राय पैन, कढ़ाई, सॉसपैन, केसरोल, वोक और ओम्नी तवा शामिल हैं—जो डीप फ्राई से लेकर करी पकाने और डोसा बनाने तक हर काम में उपयोगी हैं। प्रेस्टीज का यह प्रीमियम सिरेमिक कुकवेयर अब सभी घरों के लिए किफायती दामों पर उपलब्ध है।

बड़े-बड़े फ्राय पैन्स 18 सेमी से लेकर 28 सेमी तक के आकारों में आते हैं और आकार के अनुसार इनकी कीमत 840 रूपये से लेकर 1515 रूपये तक है। 24 सेमी से लेकर 30 सेमी तक का कढ़ाई कलेक्शन 1850 रूपये से लेकर 2550 रूपये तक में आता है। उबालने और सिमसिमाने के काम आने वाला 16 सेमी का सॉसपैन 1355 रूपये का है। केसरोल्स की प्रोडक्ट लाइन में दो आकार कुकिंग की सौम्य विधियों को सहयोग देते हैं। यह 20 सेमी और 24 सेमी के हैं, जबकि इनकी कीमतें 1875 रूपये और 2150 रूपये है। ओम्नी तवा पर डोसा और रोटी को बढ़िया तरीके से बनाया जा सकता है। यह 25 सेमी और 28 सेमी के आकारों में 1155 रूपये से लेकर 1380 रूपये तक में आता है।

प्रेस्टीज ने अपनी शुरूआत से ही नवाचार को प्राथमिकता दी है और रसोईघर के लिये ऐसे समाधान पेश किये हैं, जो परफॉर्मेंस तथा मजबूती के मामले में बेमिसाल हैं। कुकवेयर टेक्नोलॉजी में सेराग्लाइड ड्यूओ सबसे नई उन्नति है, जिसे प्रेस्टीज लगातार विकसित कर रही है। सेराग्लाइड ड्यूओ कुकिंग के सारे स्टाइल्स वाले शेफ्स को बड़े गर्व से सेवा प्रदान करता है। यह रोजाना इस्तेमाल के लिये आसानी से और खुशनुमा तरीके के साथ भोजन तैयार करने की गारंटी है। यह डीप फ्राइंग और सॉटींग तथा सिमरिंग करने के लिये भी बहुत कारगर है।

भाजपा सरकार दिल्ली को चलाने वाले मेहनतकश लोगों की झुग्गियां बेदर्दी से बुलडोजर के नीचे कुचल रही - मनीष सिसोदिया

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली में सत्ता पाते ही भाजपा ने झुग्गियों में रह रहे गरीब लोगों को 'जहां झुग्गी-वहां मकान' देने का वादा भूल गई। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने भाजपा पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि दिल्ली में भाजपा द्वारा जहाँ झुग्गी, वहाँ मकानऱ देने की दी गई चुनावी गारंटी भी एक जुमला साबित हुई। दिल्ली का मज़दूर, घरेलू कामगार, रिक्शाचालक और दिहाड़ी मज़दूर जिनकी मेहनत से देश की राजधानी चलती है, आज उन्हीं की झुग्गियाँ बेदर्दी से बुलडोज़र के नीचे कुचली जा रही हैं।

मनीष सिसोदिया ने कहा कि भाजपा के जिन विधायकों को जनता ने चुना था, वो आज कहाँ हैं? ना जवाब मिल रहा है, ना जमीन पर कोई दिख रहा है। झुग्गियों में दी जाने वाली बिजली-पानी जैसी बुनियादी सुविधाएँ तो छोड़िए, अब तो मेहनत से बनाई गई छत भी इनसे छीन ली गई है। क्या यही है "सबका साथ, सबका विकास"?

झुग्गीवालों ने भाजपा द्वारा उनको दिए गए जहां झुग्गी वहां मकान का कार्ड दिखाते हुए कहा कि यह 2,500 रुपये देने और "जहां झुग्गी, वहां मकान" का कार्ड है। इस पर जंगपुरा सीट से विधायक तरविंदर सिंह मारवाह की तस्वीर है। वह एक बार भी यहां पर आकर देखे भी नहीं कि झुग्गीवाले किस हालत में हैं, यह देखने के लिए उन्होंने एक बार भी मद्रासी कैंप की तरफ रुख नहीं किया। हमने भाजपा को वोट दिया था।

झुग्गीवालों ने कहा कि केजरीवाल की सरकार बढ़िया थी। वह हमारी पीड़ा समझती थी, इसलिए हमारा समर्थन करती थी। अगर पानी रुक जाए, तो पानी आ जाता था। पानी की भी कोई दिक्कत नहीं थी। बिजली एक बार भी बंद नहीं होती थी। 24 घंटे बिजली थी, 24 घंटे पानी था। कोई परेशानी होने पर तत्कालीन "आप" विधायक प्रवीण कुमार को फोन मिला लेते थे, वह पांच से 15 मिनट में यहां पहुंच जाते थे। आज ये झुग्गियों को ध्वस्त किया गया है और विधायक तरविंदर मारवाह ने एक बार भी आकर नहीं देखा। बस ये कार्ड देकर कहा था कि "जहां झुग्गी, वहां मकान", चिंता मत करो, आपकी झुग्गी मैं रुकवा दूंगा। मगर वह दो महीने से यहां आए ही नहीं हैं।

झुग्गीवालों ने कहा कि चूंकि अब सब कुछ उजड़ चुका है, अरविंद केजरीवाल की बातें याद आ रही हैं। उन्होंने कहा था कि अगर भाजपा की सरकार गलती से भी आ गई तो सारी झुग्गियां तोड़ देगी। हम यही चाहते हैं कि वह पांच साल के बाद दिल्ली में दोबारा आ जाएं। अरविंद केजरीवाल सत्ता से चले गए, इसलिए झुग्गीवाले बहुत दुखी हो रहे हैं।

झुग्गीवासियों ने कहा कि हमने इतनी उम्मीदों के साथ भाजपा को वोट दिया था। जिन लोगों ने भाजपा को वोट दिया, उन्हें यह देखना चाहिए कि भाजपा ने जहां झुग्गी, वहां मकान का वायदा किया था। आज ये जो आंसू हैं, उसे भाजपा को भी देखना चाहिए। सारी पार्टियों को यह सोचना चाहिए कि किसी का घर उजाड़ने से पहले उसकी मनोदशा क्या होगी। यह घर उन्होंने मेहनत करके बनाया है, एक-एक ईंट जोड़ी है और इसमें रखी हर चीज, यहां तक कि एक सुई भी, उन्होंने कोठी में काम करके जोड़ी है।

झुग्गी वासियों ने कहा कि घर में बुजुर्ग और बच्चे भी हैं। उनकी मां घर में हैं और वह खुद ही कमाने वाली हैं। यहां की कई महिलाएं कोठियों में झाड़-पोछा करके गुजारा करती हैं। अभी हमारे पास किराए पर रहने की भी स्थिति नहीं है और न ही कहीं जाने की कोई स्थिति है। भाजपा को वोट देना हमारी गलती थी। हमने बहुत बड़ी गलती कर दी। अगर केजरीवाल सरकार होती, तो शायद उनकी झुग्गियां बच जातीं।

संपादक ,प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका का महत्व

संपादक प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका एक लेखक के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे लेखक के काम को पाठकों तक पहुंचाने और उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाने में मदद करते हैं।लेखक को अपने काम के लिए उपयुक्त प्रकाशक का चयन करना चाहिए, जो उनके काम को सही तरीके से प्रस्तुत कर सके।

लेखक को संचार पत्र/पत्रिका के महत्व को समझना चाहिए, जो उनके काम को व्यापक पाठक वर्ग तक पहुंचाने में मदद करते हैं।लेखक को संपादक,प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका के साथ सहयोग करना चाहिए, जिससे उनके काम को बेहतर ढंग से प्रस्तुत किया जा सके।

लेखक को पाठकों और आलोचकों की प्रतिक्रिया को महत्व देना चाहिए, जिससे उनके काम में सुधार हो सके।लेखक को अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका के साथ अच्छे संबंध बनाने चाहिए।

लेखक के लिए सुझाव,,,,,अपने काम को अच्छी तरह से तैयार करें, लेखक को अपने काम को अच्छी तरह से तैयार करना चाहिए, जिससे वह प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका के लिए आकर्षक हो।प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका के साथ संवाद करें,लेखक को प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका के साथ संवाद करना चाहिए, जिससे उनके काम को बेहतर ढंग से प्रस्तुत किया जा सके।अपने काम का प्रचार करें, लेखक को अपने काम का प्रचार करना चाहिए, जिससे वह अधिक पाठकों तक पहुंच सके।

एक लेखक, संपादक और प्रकाशक के बीच का संबंध बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। यह संबंध न केवल लेखक के काम को बेहतर बनाने में मदद करता है, बल्कि उसे व्यापक पाठक वर्ग तक पहुंचाने में भी मदद करता है।

लेखक और संपादक के बीच का ये संबंध बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। संपादक की भूमिका न केवल लेखक के काम को सुधारने में है, बल्कि उन्हें और भी बेहतर बनाने में भी है। संपादक के सुझाव और टिप्पणियां लेखक को अपने काम को और भी गहराई से समझने में मदद करती हैं। संपादक,प्रकाशक की भूमिका न केवल लेखक के काम को प्रकाशित करने में है, बल्कि उसे व्यापक पाठक वर्ग तक पहुंचाने में भी है। प्रकाशक के समर्थन से लेखक का काम और भी प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।

इन तीनों के बीच का संबंध बहुत ही महत्वपूर्ण होता है, जो लेखक के काम को सफल बनाने में मदद करता है।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह
सहज़ हरदा मध्य प्रदेश

कैनरी एक सुंदर और मधुर आवाज़ वाला पक्षी

कैनरी एक सुंदर और मधुर आवाज़ वाला पक्षी है, जो अपने पीले रंग के लिए जाना जाता है। यहाँ कुछ रोचक जानकारी है, कैनरी के बारे में,

कैनरी की उत्पत्ति कैनरी द्वीप समूह में हुई थी, जो स्पेन के अटलांटिक महासागर में स्थित है।कैनरी का आकार लगभग 10-12 सेंटीमीटर होता है, और इसका रंग पीला होता है, जो कभी-कभी हरे या भूरे रंग के साथ मिला होता है। कैनरी की मधुर आवाज़ इसकी सबसे विशेषता है। यह पक्षी विभिन्न प्रकार के गीत गाता है, जो बहुत ही सुरीले और आकर्षक होते हैं। कैनरी का मुख्य आहार बीज, फल, और कीड़े होते हैं।

कैनरी का प्रजनन मौसम मार्च से अगस्त तक होता है, और यह पक्षी एक बार में 2-5 अंडे देता है।कैनरी की देखभाल करना बहुत आसान है, लेकिन इसके लिए एक बड़े पिंजरे और एक स्वस्थ आहार की आवश्यकता होती है।

कैनरी एक बहुत ही सुंदर और मधुर आवाज़ वाला पक्षी है, जो बहुत से लोगों को आकर्षित करता है।

कैनरी पक्षी दूसरे रंगों में भी पाया जाता है। जबकि पीला रंग कैनरी का सबसे आम और प्रसिद्ध रंग है, लेकिन ये पक्षी अन्य रंगों में भी पाए जाते हैं, जैसे कि,

सफेद,काला,भूरा,हरा,नीला,लाल,

कैनरी पक्षी की कुछ अन्य विशेषताएं हैं,

मधुर आवाज़, कैनरी पक्षी की मधुर आवाज़ इसकी सबसे विशेषता है।

आकर्षक प्रदर्शन,कैनरी पक्षी अपने प्रदर्शन के लिए जाने जाते हैं, जिसमें वे अपने पंखों को फैलाते हैं और अपनी मधुर आवाज़ से गीत गाते हैं।

बुद्धिमत्ता, कैनरी पक्षी बहुत ही बुद्धिमान होते हैं और वे अपने मालिकों के साथ अच्छा संबंध बना सकते हैं।

सामाजिक पक्षी,कैनरी पक्षी सामाजिक पक्षी होते हैं और वे अपने समूह में रहना पसंद करते हैं।

स्वच्छता,कैनरी पक्षी बहुत ही स्वच्छ पक्षी होते हैं और वे अपने पिंजरे को साफ रखने के लिए जाने जाते हैं।

इन विशेषताओं के कारण, कैनरी पक्षी बहुत ही लोकप्रिय पालतू पक्षी होते हैं।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह
सहज़ हरदा मध्य प्रदेश.

फर्टिलाइज़र उद्योग 14 करोड़ से अधिक किसानों की सेवा करता है

मुख्य संवाददाता

राष्ट्रीय। देश के सार्वजनिक क्षेत्र, संयुक्त क्षेत्र और निजी क्षेत्र की फर्टिलाइज़र कंपनियों की प्रतिनिधि संस्था फर्टिलाइज़र एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एफएआई) ने शैलेश सी. मेहता को अपना नया चेयरमैन चुना है। मेहता, दीपक फर्टिलाइजर्स एंड पेट्रोकेमिकल्स कॉरपोरेशन लिमिटेड और महाधन एग्रीटेक लिमिटेड के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर हैं।

फर्टिलाइजर उद्योग में चार दशकों से अधिक के अनुभव के साथ, मेहता ने पांच वर्षों से अधिक समय तक फर्टिलाइज़र एसोसिएशन ऑफ इंडिया के पश्चिमी क्षेत्र के चेयरमैन के रुप में कार्य कर चुके है।

फर्टिलाइजर उद्योग की पिछले दो दशकों में भारत की कृषि उपज में 60 फीसदी और बागवानी उपज में 40 फीसदी की वृद्धि में अहम भूमिका रही है।

यह उद्योग अपनी परिचालन दक्षताओं को वैश्विक मानकों के अनुरुप बनाए रखते हुए करोड़ो भारतीय किसानों तक सब्सिडीयुक्त उर्वरकों की प्रभावी आपूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इस अवसर पर मेहता ने कहा, "भारत की खाद्य संकट की स्थिति से वैश्विक कृषि निर्यातक बनने की यात्रा उल्लेखनीय रही है। फर्टिलाइज़र उद्योग इस यात्रा में एक महत्वपूर्ण भागीदार रहा है, और अब यह अधिक संतुलित और पोषक तत्व से समृद्ध उर्वरकों पर ध्यान दे रहा है जो सतत विकास को प्रोत्साहित करते हैं।

मेरे लिए यह अत्यंत सम्मान की बात है कि मुझे सरकार, उद्योग और हमारे किसानों के बीच एक सेतु के रूप में काम करने का अवसर मिला है- जो वैश्विक मानचित्र पर भारतीय किसानों और कृषि उत्पादकता को ऊपर उठाने और ऊंचा स्थान दिलाने के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करेगा।"

नोएडा एयरपोर्ट के तीसरे चरण में पुनर्वासन स्कीम से पहले शुरू हुई 14 गांव की जनगणना, 21 सवाल पूछ रही टीमें

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के तीसरे चरण में अधिग्रहित भूमि के प्रभावित परिवारों के पुनर्वास के लिए जनगणना शुरू हो गई है। टीमें 14 गांवों में किसानों से मिलकर 21 सवालों के जवाब ले रही हैं। पहले दिन 70 परिवारों की जनगणना हुई। इसी फीडबैक के आधार पर प्रशासक पुनर्वासन स्कीम तैयार करेंगे।

जेवर। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के तीसरे चरण में अधिग्रहित की जाने वाली भूमि के प्रभावित परिवारों के पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन स्कीम तैयार करने के लिए जनगणना का काम सोमवार से शुरू कर दिया।

प्रभावित कुटुंबों से टीमें पूछे रहीं 21 सवाल

टीमें गांव-गांव पहुंच प्रभावित किसानों से संपर्क कर निर्धारित प्रारूप में 21 सवालों जानकारी लेते हुए फार्म भर रहे हैं। हांलाकि कुछ जगह लोगों ने जनगणना के कार्य का हल्का विरोध किया लेकिन बाद में सभी गांव में शांतिपूर्ण जनगणना का काम चलता रहा।

15 जून तक पूरा करना है काम

उपजिलाधिकारी न्यायिक व प्रभारी जनगणना अधिकारी विवेक भदौरिया ने बताया कि जेवर के 14 गांव रोही, बनवारीवास, पारोही, रामनेर, बंकापुर, चौरोली, ख्वाजपुर, थोरा, नीमका, दयानतपुर, साबौता, मुकीमपुर शिवारा, किशोरपुर व जेवर बांगर के किसानों की 1857 हेक्टेयर जमीन का अधिग्रहण किया जा रहा है।

धारा 16 के तहत प्रशासक को पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन स्कीम तैयार करने के लिए सर्वेक्षण और सांख्यिकी गणना करानी होती है। टीमों को तहसील से स्टेशनरी देकर सुबह उनके कार्य क्षेत्र में भेजा गया।

सोमवार को सभी टीमों ने अपने निर्धारित गांव में जाकर जनगणना का काम शुरू कर दिया है। सोमवार शाम तक 70 परिवारों की जनगणना का काम पूरा कर लिया। पहला दिन होने की वजह से काम की रफ्तार कुछ धीमी रही लेकिन आने वाले समय में तेजी से काम पूरा किया जाएगा।

युवाओं को सही दिशा दिखाओ, मन से अंहकार मिटाओ - पंडित श्री आंनद कृष्ण शास्त्री

परिवहन विशेष न्यूज

आल इंडिया क्राईम रिफोम्स आग्रेनाईजेशन दिल्ली के तत्वावधान में इन्दौर में संगीतमय सात दिवसीय श्री भागवत कथा के तीसरे दिन वामन जन्मोत्सव की कथा सुनाते हुए कथा वाचक पंडित श्री आंनद कृष्ण शास्त्री जी ने कहा तीन पग भूमि मांग कर जब वामन देव ने दैत्य राज राजा बालि के अंहकार को खत्म किया। तो आज वर्तमान में भटके हुए समाज को दिशा हम क्यों नहीं दिखा सकतें हैं। बुराईयों के प्रति जागरूक नागरिक बन आवाज उठाना समय की आवश्यकता है। चुप रहने से कुछ नहीं होगा। इस कार्यक्रम समाजिक कार्यकर्ता बहादुर कानुडे आईक्रो टीम इन्दौर के मंजू पंचाल ,सुजीत गहलोत, मनीष बोरासी, हेमंत वर्मा उपस्थित थे । व्यासपीठ का पूजन सुनील मधु कानुडे ने किया । यह भागवत कथा मल्हारी मार्तंड मंदिर सेक्टर 1 स्कीम नं 78 इन्दौर में चल रही है। इस कार्यक्रम की जानकारी देते हुए आल इंडिया क्राईम रिफोम्स आग्रेनाईजेशन के मध्यप्रदेश स्टेट अध्यक्ष गिरीश जोरे व मंजू पंचाल ने प्रेस विज्ञप्ति में दी है।

सड़क हादसे में हुई युवक की मौत, कार चालक के खिलाफ केस दर्ज

पलवल में राष्ट्रीय राजमार्ग 19 पर सड़क हादसे में एक युवक की मौत हो गई। मृतक और उसका साथी सड़क पार कर रहे थे तभी एक तेज रफ्तार कार ने उन्हें टक्कर मार दी। मृतक की पहचान संदीप के रूप में हुई है जबकि घायल का नाम आलोक राज है। पुलिस ने ईको कार चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

पलवल। मुड़कटी थाना अंतर्गत राष्ट्रीय राजमार्ग 19 पर रविवार शाम को सड़क हादसे में हुई युवक की मौत के मामले में ईको कार चालक के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया गया है।

मृतक अपने साथी के साथ सड़क को पार कर रहा था। उसी दौरान वह कार की चपेट में आ गया। इस हादसे में उसका साथी भी गंभीर रूप से घायल हो गया था।

बता दें कि मृतक की पहचान संदीप और घायल की पहचान आलोक राज के रूप में हुई है थी, दोनों उत्तर प्रदेश के उन्नाव के रहने वाले थे और सेवली स्थित एक कंपनी में काम करते थे।

उनके साथ रहे सोनू कुमार ने बताया कि छुट्टी के बाद वे तीनों घरेलू सामान लेने के लिए हाईवे पार कर रहे थे। तभी मथुरा की ओर से तेज रफ्तार से आ रही ईको कार ने संदीप और आलोक राज को टक्कर मार दी।

टक्कर इतनी जोरदार थी कि संदीप की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि आलोक राज गंभीर रूप से घायल हो गया, जिसे प्राथमिक उपचार के बाद दिल्ली के एम्स अस्पताल रेफर कर दिया गया है।

हादसे के बाद चालक मौके से फरार हो गया। नंबर के आधार पर ईको कार चालक की पहचान बहादुरगढ़ के रहने वाले मोहित के रूप में हुई है। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर संदीप के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और घायल आलोक राज को अस्पताल पहुंचाया। सोनू की शिकायत पर चालक मोहित के विरुद्ध मामला दर्ज कर लिया गया है।

कानपुर में डंपरों की जोरदार भिड़ंत में चालक की मौत एक गंभीर

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां तेज रफ़्तार के फलस्वरूप मौतों का सिलसिला लगातार जारी है। इसी क्रम में दो डंपरों की जोरदार भिडंत में चालक की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई और एक घायल हो गया। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को हटवाकर जाम खुलवाया।

जानकारी के मुताबिक सचेंडी थाना क्षेत्र में आज मंगलवार सुबह हाईवे पर सुबह साढ़े पांच बजे एक डंपर ने अपने आगे चल रहे डंफर में पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। इससे एक डंपर के हेल्पर गौरव पुत्र लाला निवासी थाना मूसानगर, कानपुर देहात की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि चालक अंकित पुत्र भूरा सिंह निवासी संतनापुर थाना मूसानगर, जनपद कानपुर देहात गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने शव को मोर्चरी हाउस और घायल को हैलट भिजवाया है।

यमुना में दर्दनाक हादसा, 6 किशोरियों की डूबने से मौत; मुख्यमंत्री योगी ने जताया शोक, तत्काल सहायता के निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

आगरा, संजय साग़र सिंह। सिकंदरा क्षेत्र के नगला नाथू के पास मंगलवार को यमुना नदी में एक बेहद दर्दनाक हादसा हुआ, जहां नहाने के दौरान 6 किशोरियों की डूबने से मृत्यु हो गई। पूरे क्षेत्र में शोक की लहर फैल गई है। मृतक किशोरियों के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

घटना की जानकारी मिलते ही भाजपा नेता उपेंद्र सिंह पोस्टमार्टम हाउस पहुंचे और शोकाकुल परिजनों से मिलकर उन्हें ढांढस बंधाया। उन्होंने परिवारजनों को भरोसा दिलाया कि इस कठिन समय में पार्टी और प्रशासन पूरी तरह उनके साथ खड़ा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने घटना का तत्काल संज्ञान लिया और गहरा शोक व्यक्त करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रभावित परिवारों को शीघ्र आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाए। मुख्यमंत्री के निर्देशों के तहत प्रशासन सक्रिय हो गया है।

घटनास्थल पर एसडीएम सदर सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी पहुंच चुके हैं। सांसद श्री राजकुमार चाहर के सुपुत्र इंजीनियर शूरवीर चाहर और भाजपा नेता उपेंद्र सिंह ने अधिकारियों से स्थिति की जानकारी ली और राहत कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। साथ ही उन्होंने पीड़ित परिवारों को हर संभव मदद का आश्वासन भी दिया।

भाजपा नेता उपेंद्र सिंह ने बेहद दर्दनाक घटना पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि यह हृदयविदारक घटना न केवल स्थानीय जनता को झकझोर गई है, बल्कि प्रशासन और जनप्रतिनिधियों को भी संवेदनशीलता के साथ त्वरित कार्रवाई के लिए प्रेरित कर रही है।

यूक्रेन ने रूस के घर में 4 हज़ार कि:मी अंदर घुसकर ऑपरेशन स्पाइडर वेब (मकड़ी का जाल) को सफ़ल अंजाम देने से पूरा विश्व हैरान-18 महीनों का प्लान 117 ड्रोन,41 बम्बर्स जेट तबाह

यूक्रेन द्वारा रूस में 4 हज़ार कि:मी अंदर तस्करी से घुसकर 117 ड्रोन ऑपरेटर सहित एयरबेसो के पास पहुंच जाकर 41 बमबर्स जेट को उड़ाया भारी सुरक्षा चूक-विश्व को हाई अलर्ट पर सुरक्षा संज्ञान लेना ज़रूरी-

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ में गुटबाजी युद्ध के दौर में नई-नई हैरत अंगेज युद्ध रणनीतियों को देखकर अपने आपको पूर्ण विकसित देशों की श्रेणी में रखने वाले देश भी आज दांतों तले उंगली दबा रहे हैं कि ऑपरेशन स्पाइडर वेब (मकड़ी का जाल) को आखिर अपने अंजाम तक पहुंचनें में रूस जैसा पूर्ण विकसित देश अपनी सुरक्षा में इतनी बड़ी चूक कैसे कर सकता है कि 117 ड्रोन रूस की सीमा में करीब 4000 कि:मी से अधिक तक अंदर में घुसकर पांच हवाई ठिकानों के 41 बमबर्स जेट तबाह कर सकता है, मेरे जैसा सामान्य आदमी तो यह बात सपने में भी नहीं सोच सकता, इसकी तुलना अब 1941 के पर्ल हार्बर अटैक से की जा रही है।यूक्रेन के ड्रोन अटैक को पर्ल हार्बर अटैक से जोड़ा जा रहा है। इस हमले में जिस तरह यूक्रेन ने रूस को चौंकाया है, उसी तरह से 1941 में जापान ने अमेरिका को अपने हमले से चौंकाया था। दिसंबर, 1941 को जापान ने पर्ल हार्बर में एक आश्चर्यजनक हवाई हमला करते हुए अमेरिकी नौसैनिक अड्डे को तबाह किया था। इस हमले में 2,403 अमेरिकी सैनिक मारे गए थे। पर्ल हार्बर हमले को अमेरिका के द्वितीय विश्व युद्ध में शामिल होने की वजह माना जाता है।हालांकि ऑपरेशन स्पाइडर वेब के पीछे बड़ी ताकतों का हाथ होगा ?परंतु यहां सवाल यह है खड़ा होता है कि यह 117 ड्रोन ऑपरेटर सहित रूस के 4000 किलोमीटर अंदर तक घुसने और पांच हवाई ठिकानों के पास पहुंचकर रिमोट से 41 बॉम्बर्स जेट्स को उड़ा दिया व रूस को पता ही नहीं चला। बता दें रिमोट का उपयोग ड्रोन के 20 किलोमीटर के दायरे से किया जा सकता है जो रूस की भारी सुरक्षा चूक का नतीजा हो सकता है,जिसक़ा पूरी दुनियाँ को स्वतः संज्ञान लेकर, सीमा सुरक्षा को चाक चौबंद करना जरूरी हो गया है। चूँकि अब वैश्विक स्तरपर मिलिट्री संघर्ष का आधार ड्रोन वार हो सकता है, यूक्रेन के ऑपरेशन स्पाइडर वेब से दुनियाँ सतर्क हो गई है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, यूक्रेन ने रूस के घर में 4000 किलोमीटर अंदर घुसकर ऑपरेशन स्पाइडर वेब को सफल अंजाम देने से पूरा विश्व हैरान, 18 महीनों का प्लान, 117 ड्रोन से 41 बॉमर्स जेट तबाहकर दिया !

साथियों बात अगर हम दिनांक 1 जून 2025 को यूक्रेन द्वारा रूस के घर में 4 हज़ार किलोमीटर अंदर घुसकर ऑपरेशन स्पाइडर वेब के क्रियान्वयन को समझने की करें तो, रविवार को रूस और यूक्रेन के बीच तीन साल से जारी जंग में एक नया मोड़ आया, जिस यूक्रेन के बारे में सब कहते थे कि वह अमेरिका से मिले हथियारों के दम पर जंग लड़ रहा है, उसने 'ऑपरेशन स्पाइडर वेब' के साथ ही सबका मुंह बंद कर दिया।यूक्रेन के ड्रोन ने दुश्मन के घर में घुसकर उसके 40 बॉम्बर्स जेट्स पूरी तरह से खत्म कर दिए है,मीडिया न्यूज़ की मानें तोयूक्रेन ने इस 'पर्लहार्बर' मोमेंट के साथ ही रूस को दो अरब डॉलर से भी ज्यादा की चोट पहुंचाई है, यूक्रेन का यह ड्रोन हमला भारत की तरफ से पाकिस्तान के खिलाफ की गई कार्रवाई अभियान ऑपरेशन सिंदूर के कुछ ही हफ्तों बाद हुआ है, ऐसे में भारत भी इससे बड़े सबक सीख सकता है क्योंकि अब जंग का मैदान तेजी से हर पल बदल रहा है।यूक्रेन ने रूस के चार बड़े एयरबेस पर ड्रोन अटैक किए थे, जिसमें पहला था ओलेन्या एयरबेस जो यूक्रेन की सीमा से 1800 किलोमीटर दूर मौजूद है,दूसराहै इवानावो एयरबेस, यूक्रेन की सीमा से इस टारगेट की दूरी 1 हजार किलोमीटर है,टारगेट किए गए तीसरे एयरबेस का नाम है डिगिलेव जो यूक्रेनी बॉर्डर से 500 किलोमीटर दूर मौजूद है और चौथे एयरबेस का नाम है बेलाया, जो यूक्रेनी बॉर्डर से चार हजार तीन सौ किलोमीटर दूर है। पिछले तीन सालों से चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध में सैकड़ों मौकों पर ड्रोंस का इस्तेमाल किया गया है लेकिन ये पहली बार था जब कोई ड्रोन 4 हजार किलोमीटर दूर तक चला गया हो। अब सवाल उठ रहा है कि यूक्रेन के ड्रोन 4 हजार किलोमीटर दूर चले गए और रूस के एयर डिफेंस या राडार को खबर भी नहीं लगा ऐसा कैसे संभवहो सकता है?

साथियों बात अगर हम ऑपरेटरों सहित 117 ड्रोन को 4000 किलोमीटर अंदर तस्करी से रूस में पहुंचने को समझने की करें तो, कैसे दिया गया ऑपरेशन को अंजाम?, यूक्रेनी राष्ट्रपति ने मीडिया बताया है कि इस ऑपरेशन में इस्तेमाल किए गए 117 ड्रोन के साथ ड्रोन ऑपरेटरों की समान संख्या शामिल थी। यूक्रेन ने रूस में लक्ष्यों पर हमला करने के लिए सीधे ड्रोन लॉन्च करने के बजाय एक अलग और बेहद नया तरीका अपनाया। विस्फोटकों से भरे यूक्रेनी ड्रोन्स को लकड़ी के ढांचे के अंदर छिपाकर रूस में तस्करी के जरिए पहुंचाया गया, इन लकड़ी के ढांचे को ट्रकों पर लादा गया था, जो एयरबेस के पास तक पहुंचाए गए।यूक्रेनी सुरक्षा सूत्र के अनुसार, ये ट्रक टागरेटिड एयरबेस के पास तक पहुंचने के बाद आगे की कार्रवाई की गई। इन ड्रोन के अपने टारगेट पर पहुंचने के बाद लकड़ी के ढांचे की छतें दूर से खोली गईं। इसके बाद ड्रोन ने उड़ान भरी और हमला शुरू कर दिया। ऑपरेशन के सबसे दिलचस्प हिस्से को साझा करते हुए जेलेंस्की ने मीडिया में कहा कि रूसी क्षेत्र पर यूक्रेन के ऑपरेशन का संचालन करने के लिए ऑफिश एफएसबी के मुख्यालय के ठीक बगल में बनाया गया।क्यों हो रही है पर्ल हार्बर से तुलना?, यूक्रेन ने कहा है कि उसके ड्रोन हमलों में रूस के 41 विमानों को नुकसान पहुंचा है। रूस के न्यूक्लियर कैपेबल टीयू-95, टीयू-22 बमवर्षक और ए-50 विमान इस हमले में तबाह हुए हैं। यूक्रेन का कहना है कि इन विमानों का इस्तेमाल उसकी जमीन पर बमबारी करने के लिए किया गया था। रूसी रक्षा मंत्रालय ने माना है कि यूक्रेन के ड्रोन हमलों में मुरमांस्क, इरकुत्स्क, इवानोवोरियाजान और अमूर एयरबेस को निशाना बनाया गया है।

साथियों बात अगर हम ड्रोन वार भविष्य की हकीकत की करें तो, ड्रोन वॉर-ड्रोन वॉर आने वाले समय में मिलिट्री संघर्ष का आधार होने वाले हैं, ड्रोन तेजी से मुख्य बल बनने की तरफ बढ़ चुके हैं, यूक्रेन का स्पाइडर वेब हमला इस बात का उदाहरण है कि यूएवी या अनमैन्ड ड्रोन कोई नई चीज नहीं हैं बल्कि आने वाले समय में युद्धों लड़ने के तरीके का आधार हैं, माना जाने लगा है कि सेना, दुश्मन के इलाके में गहराई तक जा सकती है और जेट को बड़ा नुकसान पहुंचा सकती है, सबसे बड़ी बात है कि एक भी पायलट का जीवन जरा भी खतरे में नहीं आ सकता है। इसलिए ड्रोन सिस्टम की तरफ बढ़ना चाहिए, भारत ने अपने लड़ाकू विमानों, हेलीकॉप्टर्स और एयरट्रांसपोर्ट में दशकों तक रणनीतिक प्रयास किएहैं, लेकिन स्पाइडर वेब एक महत्वपूर्ण बात की पुष्टि करता है, वायु शक्ति का भविष्य मानव रहित, एआई- ऑपरेटेड और लंबी दूरी का होने वाला है, भारत ने उस दिशा में शुरुआती कदम उठाए हैं, लेकिन अभी तक वह स्पीड नहीं पकड़ सका है जिसकी अपेक्षा की गई थी। यूक्रेन के ऑपरेशन से भारत को स्वदेशी ड्रोन, आर्म्ड यूएवी और ऑटोनमी बेस्ड हथियार सिस्टम पर कहीं ज्यादा आक्रामक तरीके से आगे बढ़ना चाहिए।

अतः अगर हम उपरोक्त पर्यावरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि यूक्रेन ने रूस के घर में 4 हज़ार कि:मी अंदर घुसकर ऑपरेशन स्पाइडर वेब (मकड़ी का जाल) को सफ़ल अंजाम देने से पूरा विश्व हैरान-18 महीनों का प्लान 117 ड्रोन,41 बम्बर्स जेट तबाह,वैश्विक स्तरपर अब मिलिट्री संघर्ष का आधार ड्रोन वार होनें की संभावना-यूक्रेन के ऑपरेशन स्पाइडर वेब से दुनिया सतर्क,यूक्रेन द्वारा रूस में 4 हज़ार कि:मी अंदर तस्करी से घुसकर 117 ड्रोन ऑपरेटर सहित एयरबेसो के पास पहुंच जाकर 41 बमबर्स जेट को उड़ाया भारी सुरक्षा चूक -विश्व को हाई अलर्ट पर सुरक्षा संज्ञान लेना ज़रूरी।

होंडा सीबी650आर और सीबीआर650आर के ये वेरिएंट हुआ बंद, जल्द ही ई-क्लच तकनीक से हुई थी लैस

परिवहन विशेष न्यूज

होंडा ने अपनी पॉपुलर 650cc 4-सिलेंडर बाइक को ई-क्लच तकनीक के साथ फिर से लॉन्च किया है। कंपनी ने CB650R और CBR650R के बेस वेरिएंट को बंद कर दिया है। अब ये दोनों बाइक केवल ई-क्लच वेरिएंट में ही उपलब्ध होंगी। ई-क्लच तकनीक से क्लच को पूरी तरह से हटाया जा सकता है जिससे शहर के ट्रैफिक में क्लच की समस्या से बचा जा सकता है।

नई दिल्ली। होंडा ने जनवरी 2025 में अपनी पॉपुलर 650cc 4-सिलेंडर बाइक को भारत में लॉन्च किया था। लॉन्च के कुछ महीने के बाद ही कंपनी ने इसे ई-क्लच तकनीक से लैस कर दिया था, जो CB650R और CBR650R थी। इन दोनों को ही 40,000 रुपये की ज्यादा कीमत पर फिर से लॉन्च किया गया था। अब कंपने ने इसके बेस वेरिएंट को पूरी तरह से हटा दिया है। अब यह दोनों बाइक भारत में केवल ई-क्लच के साथ आएगी।

Honda CB650R और CBR650R का बेस वेरिएंट बंद

Honda CB650R और CBR650R को नए फीचर्स और अपडेट के साथ लॉन्च हुए केवल 6 महीने ही हुए है। कंपनी ने इन दोनों के ही मानक वेरिएंट को अब बंद कर दिया है। अब यह भारत में केवल इसका ई-क्लच वेरिएंट ही बिक्री के लिए उपलब्ध है। इन दोनों के बेस वेरिएंट के बंद होने पर ग्राहकों को इसे खरीदने के लिए 40,000 रुपये ज्यादा का भुगतान करना होगा। इस सिस्टम के बाइक में जुड़ने के बाद वह पहले के मुकाबले 2.8 किलोग्राम ज्यादा भारी भी हो गई है। भले ही यह पहले से महंगी और भारी है, लेकिन इसके कई फायदे भी है।

ई-क्लच के फायदे

अभी शुरुआत के लिए होंडा 650 में अभी भी क्लच लीवर दिया गया है, अगर राइडर चाहे तो इसे पहले की तरह ही चला सकता है। होंडा की सुपरस्पोर्ट बाइक में दी जानी वाली ई-क्लच तकनीक अपने DCT या यामाहा के Y-AMT जैसे दूसरे ऑटोमैटिक ऑप्शन से अलग है, जिसे आपने 2024 MT-09 में देखा होगा।

इस तकनीक से क्लच को बाइक से पूरी तरह से हटाया जा सकता है और बाइक के रुकने पर भी इसका इस्तेमाल करने की जरूरत नहीं होती है। हालांकि, अभी भी गियर शिफ्ट करने इसकी जरूरत है और राइडर के लिए यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि बाइक अलग-अलग स्पीड पर सही गियर में हो।

ई-क्लच तकनीक का उद्देश्य आपको एक सामान्य मोटरसाइकिल चलाने का आनंद प्रदान करना है, वो भी सिटी ट्रैफिक में क्लच से निपटने के लिए आने वासी समस्याओं के बिना। यह तकनीक सुनने में तो काफी बढ़िया लगती है, लेकिन यह भारतीय शहरों में कितना अच्छा काम करता है यह तो बाइक चलाने के बाद ही पता चलेगा।

Honda CB650R और CBR650R का इंजन

होंडो की इन दोनों ही मोटरसाइकिल में 649cc इनलाइन 4-सिलेंडर लिक्विड-कूल्ड इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 95hp की पावर और 63Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 6-स्पीड गियरबॉक्स से जोड़ा गया है। दोनों ही बाइक को ब्लैक और रेड कलर ऑप्शन में पेश किया जाता है।

Honda CB650R और CBR650R की कीमत

भारत में CB650R की एक्स-शोरूम कीमत 9.60 लाख रुपये है और CBR650R की एक्स-शोरूम कीमत 10.40 लाख रुपये है।

1 नवंबर ने इन गाड़ियों की दिल्ली में नो एंट्री, पेट्रोल पंप पर भी नहीं मिलेगा फ्यूल

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण को कम करने के लिए मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने घोषणा की है कि 1 नवंबर 2025 से केवल BS6 CNG और इलेक्ट्रिक वाहनों को ही दिल्ली में प्रवेश मिलेगा। यह नियम विशेष रूप से कमर्शियल वाहनों के लिए है। निगरानी के लिए ANPR कैमरे लगाए जाएंगे जो नंबर प्लेट स्कैन करके पुरानी गाड़ियों की पहचान करेंगे और उन्हें दिल्ली में प्रवेश करने से रोकेंगे।

नई दिल्ली। दिल्ली में लगातार बढ़ते एयर पॉल्यूशन को कम करने के लिए बड़ा कदम उठाया है। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने घोषणा किया है कि दिल्ली में 1 नवंबर 2025 से केवल BS6, CNG, और इलेक्ट्रिक वाहनों को ही आने की इजाजत होगी। इस नियम को खासतौर पर कमर्शियल वाहनों के लिए लेकर आया गया है। इसके साथ ही दिल्ली में पुराने और प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों को दिल्ली में आने से रोकने के लिए ANPR (ऑटोमैटिक नंबर प्लेट रिकग्निशन) कैमरे भी लगाए जाएंगे। आइए जानते हैं कि नया नियम क्या है, कैसे काम करेगा, और इससे दिल्ली की हवा पर क्या असर होगा?

नया नियम क्या है?

राजधानी दिल्ली में हर साल ठंड के मोसम में पॉल्यूशन की समस्या गंभीर होती जा रही है। इसे कम करने के लिए M रेखा गुप्ता ने सख्त कदम उठाने का फैसला किया है। इसके लिए उन्होंने 1 नवंबर 2025 से दिल्ली में बाहर से आने वाले सभी कमर्शियल वाहनों के लिए नया नियम लेकर आई है। इस नियम के तहत उन ही गाड़ियों को दिल्ली में एंट्री दी जाएगी, जो BS6, CNG, और इलेक्ट्रिक वाहन होंगी। इसका सीधा मतलब है कि पुराने डीजल या पेट्रोल वाहन जो ज्यादा प्रदूषण फैलाते हैं, उन्हें दिल्ली में एंट्री नहीं दी जाएगी। यह नियम उन गाड़ियों पर लागू नहीं होगी, जिनका रजिस्ट्रेशन दिल्ली में हुआ है, लेकिन बाहर से आने वाली गाड़ियों के लि अनिवार्य होगा।

पुरानी गाड़ियों पर होगी सख्त निगरानी

पुराने वाहन जो ज्यादा प्रदूषण फैलाते हैं, उन्हें दिल्ली में आने से रोकने के लिए ANPR कैमरों का इस्तेमाल किया जाएगा। यह कैमरे दिल्ली के सभी एंट्री पॉइंट्स और पेट्रोल पंप पर लगाए जाएंगे। यह गाड़ियों के नंबर प्लेट को स्कैन करेंगे और तुरंत पता कर लेंगे कि गाड़ी पुरानी है या फिर नहीं। अगर कोई डीजल गाड़ी 10 साल से पुरानी और पेट्रोल 15 साल से पुरानी होगी, तो उन्हें एंड-ऑफ-लाइफ माना जाएगा। ऐसी गाड़ियों को ट्रेस करके तुरंत रोका जाएगा। इतना ही नहीं इन गाड़ियों को पेट्रोल पंप पर फ्यूल नहीं दिया जाएगा।

हुंडई अलकज़ार के कई वेरिएंट हुए लॉन्च, सनरूफ समेत कई प्रीमियम फीचर्स से है लैस

हुंडई ने Alcazar को नए कॉर्पोरेट ट्रिम के साथ भारत में पेश किया है। यह नया ट्रिम मैनुअल और ऑटोमैटिक दोनों गियरबॉक्स में उपलब्ध है। Alcazar के डीजल वेरिएंट में अब पैनोरमिक सनरूफ भी मिलेगा जो पहले केवल पेट्रोल वेरिएंट में था। नए कॉर्पोरेट ट्रिम में एलईडी हेडलैंप 17-इंच अलॉय डुअल-जोन एसी और 10 .25-इंच टचस्क्रीन जैसे फीचर्स हैं। इसमें 1.5-लीटर का डीजल इंजन है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। हुंडई अलकज़ार को नए कॉर्पोरेट ट्रिम के साथ भारत में लॉन्च किया गया है। इस नए कॉर्पोरेट ट्रिम को मैनुअल और ऑटोमैटिक दोनों गियरबॉक्स के साथ लेकर आया गया है। अल्काजार को नया अपडेट मिलने के साथ ही अब इसके डीजल वेरिएंट में पैनोरमिक सनरूफ दिया गया है, जिसकी वजह से इसका डीजल वेरिएंट पहले से ज्यादा प्रीमियम हो गया है। आइए विस्तार में जानते हैं कि Hyundai Alcazar के नए कॉर्पोरेट ट्रिम में क्या नए फीचर्स दिए गए हैं?

Hyundai Alcazar नए वेरिएंट में क्या मिला?

अभी तक पैनोरमिक सनरूफ Hyundai Alcazar के केवल पेट्रोल वेरिएंट में मिलता था, जो दूसरे बेस प्रेस्टीज ट्रिम से मिलता था। अब इसके डीजल वेरिएंट को भी पैनोरमिक सनरूफ दे दिया गया है। इसके डीजल वेरिएंट को पैनोरमिक सनरूफ से लैस होने के बाद यह पहले से ज्यादा किफायती हो गई है। अब लोगों को इसमें सनरूफ पाने के लिए केवल पेट्रोल वेरिएंट पर निर्भर नहीं रहना होगा, वह अब डीजल वेरिएंट को भी खरीद सकते हैं।

Hyundai Alcazar को ये फीचर्स मिले

भारतीय ग्राहकों को पैनोरमिक सनरूफ काफी पसंद है, जिसे देखते हुए हुंडई ने अल्काजार के डीजल वेरिएंट को सनरूफ से लैस किया है। नया कॉर्पोरेट ट्रिम को प्रेस्टीज और प्लेटिनम ट्रिम के बीच रखा गया है। इसे पैनोरमिक सनरूफ के अलावा, एलईडी हेडलैंप, 17-इंच अलॉय, डुअल-जोन एसी, एम्बिएंट लाइटिंग, वायरलेस एप्पल कारप्ले और एंड्रॉयड ऑटो के साथ 10.25-इंच टचस्क्रीन, वायरलेस चार्जर, 6 एयरबैग और ESC से भी लैस किया है।

Hyundai Alcazar का इंजन

इसे 1.5-लीटर के डीजल इंजन के साथ पेश किया जाता है, जो 116 hp की पावर और 250 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। पहले यह केवल मैनुअल गियरबॉक्स के साथ आता था, अब इसे 6-स्पीड AT गियरबॉक्स से भी लैस कर दिया गया है।

Hyundai Alcazar का नया पेट्रोल-DCT वेरिएंट

Alcazar के डीजल वर्जन को अपडेट करने के साथ ही इसका नया पेट्रोल-DCT वेरिएंट भी लॉन्च किया गया है, जिसमें 7-स्पीड DCT गियरबॉक्स दिया गया है। इसे 2.30 लाख रुपये तक और ज्यादा किफायती बनाया गया है। पहले इसे प्लेटिनम ट्रिम पर पेश किया जाता था, जिसकी कीमत 20.94 लाख रुपये से शुरू होती है। नया DCT गियरबॉक्स 1.5-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन के साथ आता है, जो 160 hp की पावर और 253 Nm का टॉर्क जनरेट करता है।

Hyundai Alcazar की कीमत

हुंडई अल्काजार कॉर्पोरेट की कीमत को प्रेस्टीज से 65,000 रुपये ज्यादा है। यह वेरिएंट DCT मैनुअल गियरबॉक्स से 1.42 लाख रुपये ज्यादा महंगी है।

जून 2025 में रेनॉल्ट कारें पर बंपर डिस्काउंट ऑफर, गाड़ियों पर 80,000 रुपये तक की छूट

परिवहन विशेष न्यूज

रेनॉल्ट कारें जून 2025 छूटजून 2025 में Renault अपनी Kwid Kiger और Triber कारों पर 80000 रुपये तक की छूट दे रही है। इन ऑफर्स में नकद छूट एक्सचेंज बोनस और स्क्रैपेज बेनिफिट शामिल हैं। Kwid पर 50000 रुपये तक जबकि Kiger और Triber पर 80000 रुपये तक की छूट मिल रही है। कुछ वेरिएंट पर 0 प्रतिशत ब्याज दर पर फाइनेंस की सुविधा भी उपलब्ध है।

नई दिल्ली। जून 2025 में Renault Cars पर शानदार डिस्काउंट ऑफर मिल रहा है। इस छूट के तहत कंपनी अपनी गाड़ियों पर 80,000 रुपये तक की छूट दे रही है। यह ऑफर कंपनी Kwid, Kiger और Triber पर दे रही है। इन ऑफर्स में नकद छूट, एक्सचेंज बोनस और स्क्रैपेज बेनेफिट तक शामिल है। आइए जानते हैं कि Renault की किस कार पर कितना डिस्काउंट मिल रहा है?

1. Renault Kwid पर डिस्काउंट

Kwid पर 50,000 हजार रुपये तक का डिस्काउंट मिल रहा है। इसके टॉप-स्पेक RXT और क्लाइंबर वेरिएंट पर नकद छूट, एक्सचेंज बोनस और स्क्रैपेज बेनेफिट सभी ऑफर मिल रहे हैं। इसके RXE और RXL(O) वेरिएंट पर केवल लॉयल्टी और स्क्रैपेज ऑफर मिल रहा है। Renault Kwid को भारतीय बाजार में 4.70 लाख रुपये से 6.45 लाख रुपये की कीमत के बीच ऑफर किया जा रहा है।

2. Renault Kiger पर डिस्काउंट

Renault Kiger पर जून 2025 में 80,000 रुपये तक का डिस्काउंट मिल रहा है। Kiger के RXE और RXL वेरिएंट केवल लॉयल्टी और स्क्रैपेज ऑफर दिया जा रहा है। इसे 0 प्रतिशत ROI फाइनेंस के जरिए खरीदने वाले लोगों को 40,000 रुपये तक की नकद छूट दी जा रही है। Renault Kiger को भारतीय बाजार में 6.10 लाख रुपये से लेकर 11.23 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में पेश किया जाता है।

3. Renault Triber पर डिस्काउंट

जून 2025 में Kiger की तरह ही Triber पर भी 80,000 रुपये तक का डिस्काउंट ऑफर मिल रहा है। इसके RXE और RXL वेरिएंट पर केवल लॉयल्टी और स्क्रैपेज बोनस दिया जा रहा है। इसके कुछ चुनिंदा वेरिएंट पर 0 प्रतिशत ब्याज दर पर फाइनेंस करने की भी सुविधा दी जा रही है। Renault Triber को भारत में 6.10 लाख रुपये से 8.98 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत के बीच ऑफर किया जाता है।

टाटा हैरियर ईवी vs महिंद्रा एक्सईवी 9ई: कीमत और ड्राइविंग रेंज के मामले में कौन बेहतर?

परिवहन विशेष न्यूज

टाटा मोटर्स ने अपनी Tata Harrier EV को लॉन्च किया है जिसका मुकाबला Mahindra XEV 9e से है। Tata Harrier EV दो बैटरी पैक के साथ आती है और 627 किमी तक की रेंज देती है। Mahindra XEV 9e में 79 kWh बैटरी है जो 656 किमी तक की रेंज देती है। Tata Harrier EV की कीमत 21.49 लाख रुपये और Mahindra XEV 9e की कीमत 21.90 लाख रुपये है।

नई दिल्ली। इलेक्ट्रिक SUV सेगमेंट में टाटा मोटर्स ने अपनी Tata Harrier EV को लॉन्च कर दिया है। इसे कई बेहतरीन फीचर्स के साथ लेकर आया गया है। भारतीय बाजार में इसका सीधा मुकाबला Mahindra XEV 9e से देखने के लिए मिलेगा, जिसके देखते हुए हम यहां पर इन दोनों (Tata Harrier EV Vs Mahindra XEV 9e) इलेक्ट्रिक SUV की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि कीमत और ड्राइविंग रेंज के मामले कौन बेहतर है।

1. Tata Harrier EV Vs Mahindra XEV 9e: बैटरी और रेंज

Tata Harrier EV: इसे दो बैटरी पैक ऑप्शन के साथ लेकर आया गय है। इसमें 65 और 75 kWh क्षमता की बैटरी दिए गए हैं। टाटा की इलेक्ट्रिक SUV महज 25 मिनट में 120 kW फास्ट चार्जर से 20 से 80 फीसद तक चार्ज हो जाती है। यह 15 मिनट की फास्ट चार्जिंग में 250 किमी तक की रेंज दे सकती है। कंपनी का दावा है कि यह फुल चार्ज होने के बाद 627 किलोमीटर तक की ड्राइविंग रेंज देगी। दोनों ही बैटरी को एडवांस कूलिंग सिस्टम के साथ लेकर आया गया है, जो बैटरी के टेंपरेचर को कंट्रोल करने में मदद करती है।

Mahindra XEV 9e: इसमें 59kWh और 79kWh LFP (लिथियम-आयरन फॉस्फेट) बैटरी पैक दिया गया है। महिंद्रा की इलेक्ट्रिक SUV महज 20 मिनट में 175 kW DC फास्ट चार्जर से 20 से 80 फीसद तक चार्ज हो जाती है। कंपनी का दावा है कि कि इसकी बड़ी 79 kWh बैटरी फुल चार्ज होने के बाद 656 किमी तक का ड्राइविंग रेंज देगी।

2. Tata Harrier EV Vs Mahindra XEV 9e: मोटर और पावर

Tata Harrier EV: टाटा हैरियर ईवी में ड्यूल मोटर दिया गया है। यह सभी पहियों तक पावर पहुंचाने का काम करेगी। हैरियर ईवी 238 PS की पावर और 504 Nm का टॉर्क जनरेट करती है। इसे 0 से लेकर 100 किमी तक की स्पीड पकड़ने में महज 6.3 सेकेंड का समय लगता है।

Mahindra XEV 9e: इसमें महिंद्रा का 'कॉम्पैक्ट थ्री-इन-वन पावरट्रेन का इस्तेमाल किया गया है, जिसमें मोटर, इन्वर्टर और ट्रांसमिशन शामिल है। इसका 79 kWh बैटरी पैक 286 hp की पावर और 380 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। कंपनी दावा करती है कि यह महज 6.7 सेकंड में 0-100kph की स्पीड पकड़ लेती है। इसका 59 kWh बैटरी पैक 231 hp की पावर जनरेट करता है।

3. Tata Harrier EV Vs Mahindra XEV 9e: कीमत

Tata Harrier EV: टाटा मोटर्स ने अपनी इलेक्ट्रिक SUV Harrier EV को भारतीय बाजार में 21.49 लाख रुपये की इंटोडक्ट्री कीमत पर लॉन्च किया है। कंपनी ने इसकी बैटरी पर लाइफटाइम किलोमीटर वारंटी का ऑफर भी दे रही है।

Mahindra XEV 9e: महिंद्रा की ऑल-इलेक्ट्रिक कूप SUV XEV 9e को भारतीय बाजार में 21.90 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में ऑफर किया जाता है।

भारत की बढ़ती शीतलन मांग: ऊर्जा-कुशल विकल्पों के लिए एक कॉल

विजय गर्ग

भारत के तेजी से आर्थिक विस्तार और शहरी परिवर्तन ने ऊर्जा की मांग में अभूतपूर्व वृद्धि को बढ़ावा दिया है। इस वृद्धि के सबसे दृश्यमान परिणामों में से एक बिजली की खपत में वृद्धि है, जो 2013-14 में 136 गीगावाट (जीडब्ल्यू) से 2023-24 में 243 गीगावाट तक चढ़ गया है। 30 मई, 2024 को देश ने पीक पावर डिमांड में 250 गीगावॉट का सर्वकालिक उच्च स्तर दर्ज किया। यह प्रवृत्ति धीमी होने का कोई संकेत नहीं दिखाती है, एक प्रमुख योगदानकर्ता के बढ़ते तापमान और शहरी आबादी के विस्तार के बीच शीतलन समाधान की बढ़ती आवश्यकता है। अकेले 2024 में, इनडोर जलवायु नियंत्रण की बढ़ती मांग को रेखांकित करते हुए, एयर कंडीशनर (एसी) की बिक्री में 40-50 प्रतिशत की वृद्धि हुई। आगे देखते हुए, गर्मियों 2025 में पीक बिजली की मांग में 9-10 प्रतिशत की वृद्धि देखने की उम्मीद है, जो ठंडा जरूरतों से भारी है। पहले से ही, प्रशंसक और एसी शहरी भारत में घरेलू बिजली के उपयोग के लगभग आधे हिस्से में योगदान करते हैं। फिर भी, इसके बावजूद, केवल लगभग 3 प्रतिशत परिवार ही सुपर ऊर्जा-कुशल छत प्रशंसकों का उपयोग करते हैं। प्राथमिक बाधा सामर्थ्य है, क्योंकि ये प्रशंसक आमतौर पर एक उच्च अग्रिम लागत लेते हैं। इस सामर्थ्य अंतर को संबोधित करना न केवल एक आर्थिक चिंता है, बल्कि एक रणनीतिक अनिवार्यता भी है। ऊर्जा-कुशल शीतलन उपकरणों को व्यापक रूप से अपनाने से भारत को ग्रिड तनाव को कम करने, ऊर्जा की खपत को कम करने और दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाने का एक अनूठा अवसर मिलता है।

पीक की मांग

हर साल, भारत 10 से 15 मिलियन नई एसी इकाइयों के बीच जोड़ता है। 2035 तक, देश 150 मिलियन अधिक स्थापित देख सकता था। सर्वव्यापी छत पंखे के उपयोग के साथ, यह वृद्धि बिजली की मांग में एक तेज मौसमी वृद्धि पैदा करती है - विशेष रूप से सबसे गर्म महीनों के दौरान। यह मौसमी चोटी बिजली के बुनियादी ढांचे पर भारी दबाव डालती है, जिससे अक्सर ब्लैकआउट होता है, बिजली प्रदाताओं के लिए खरीद लागत में वृद्धि होती है, और उपभोक्ताओं के लिए अविश्वसनीय आपूर्ति होती है।

इस संदर्भ में, शीतलन उपकरणों की दक्षता में सुधार केवल एक घरेलू मुद्दा नहीं बल्कि एक राष्ट्रीय प्राथमिकता बन जाती है। पावर ग्रिड पर लोड को कम करके, ऊर्जा-कुशल उपकरण बिजली की आपूर्ति को स्थिर करने में मदद कर सकते हैं।

स्वामित्व की कुल लागत

कई उपभोक्ता अपने थोड़े अधिक मूल्य वाले टैग के कारण ऊर्जा-कुशल उपकरण खरीदने में संकोच करते हैं। हालांकि, ये उपकरण अक्सर समय के साथ महत्वपूर्ण धन बचाते हैं। स्वामित्व की कुल लागत की अवधारणा में न केवल प्रारंभिक खरीद मूल्य शामिल है, बल्कि उत्पाद के जीवनकाल पर परिचालन लागत भी शामिल है। 5-स्टार एसी और बीएलडीसी (ब्रशलेस डायरेक्ट करंट) जैसे उच्च दक्षता वाले उपकरण अपने कम कुशल समकक्षों की तुलना में सालाना 50 प्रतिशत तक कम बिजली की खपत करते हैं। 8 से 10 वर्षों के उपयोग से, ये बचत प्रारंभिक मूल्य अंतर से कहीं अधिक हो सकती है। अध्ययनों से संकेत मिलता है कि स्वामित्व की समग्र लागत को 17 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है, जिससे न केवल पर्यावरण की दृष्टि से बल्कि आर्थिक रूप से उच्च दक्षता वाले मॉडल बन सकते हैं।

एसी के लिए माइलेज' की रेटिंग

उपभोक्ताओं को सूचित निर्णय लेने में मदद करने के लिए, भारत ने एयर कंडीशनर के लिए भारतीय मौसमी ऊर्जा दक्षता अनुपात प्रणाली की शुरुआत की। आईएसईईआर एसी के लिए एक ₹माइलेज₹ लेबल के समान है, जो मौसमी विविधताओं में खपत ऊर्जा की प्रति इकाई शीतलन आउटपुट को मापता है। एक उच्च आईएसईईआर रेटिंग बेहतर ऊर्जा प्रदर्शन का प्रतीक है। उदाहरण के लिए, 5.0 या उससे अधिक के आईएसईईआर मूल्य के साथ 5-स्टार एसी 30 किलोमीटर प्रति लीटर देने वाली कार की तुलना में है, जबकि 3.5 रेटिंग वाला 3-स्टार एसी 20 किमी / लीटर के करीब हो सकता है। समय के साथ, यह अंतर पर्याप्त बिजली बिल बचत में तब्दील हो जाता है - 5-स्टार एसी को एक स्मार्ट निवेश बनाता है, विशेष रूप से

भारत जैसे जलवायु में, जहां गर्मियों की शीतलन की आवश्यकता गहन होती है।

क्यों बीएलडीसी प्रशंसक नब्ज बनाता है?

भारतीय घरों में छत के पंखे सबसे व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले शीतलन उपकरण हैं और अक्सर दिन में 15 से 18 घंटे काम करते हैं, विशेष रूप से गर्म क्षेत्रों में। पारंपरिक प्रेरण-आधारित प्रशंसक आमतौर पर 70-80 वाट का उपभोग करते हैं, जबकि ऊर्जा-कुशल बीएलडीसी प्रशंसकों को केवल 28-35 वाट की आवश्यकता होती है। घरेलू स्तर पर, यह बिजली के बिलों पर 15 प्रतिशत तक की बचत में तब्दील हो जाता है। जबकि एक पारंपरिक प्रशंसक के लिए INR 1,300 की तुलना में BLDC प्रशंसक की लागत INR 2,700 के आसपास होती है, ऊर्जा बचत के माध्यम से अंतर को 18 महीने से कम समय में फिर से जोड़ा जा सकता है। उसके बाद, प्रशंसक अपने 7-8 वर्ष के जीवनकाल के शेष के लिए लगभग लागत मुक्त संचालित करता है। बीएलडीसी प्रशंसकों को व्यापक रूप से अपनाने से परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ सकता है। यदि प्रत्येक भारतीय घर ने सिर्फ दो ऐसे प्रशंसकों को स्थापित किया और उन्हें प्रतिदिन 15 घंटे तक संचालित किया, तो राष्ट्रीय बचत सालाना INR 78,000 करोड़ से अधिक हो सकती है।

वाट क्षमता मिथक को डिबंकिंग करना

एक सामान्य गलत धारणा यह है कि उच्च वाट क्षमता का अर्थ बेहतर प्रदर्शन है। यह गलतफहमी विशेष रूप से प्रकाश की जगह में प्रचलित है, जहां उपभोक्ता अक्सर मानते हैं कि 9-वाट का बल्ब 6-वाट की तुलना में उज्जवल है। वाट क्षमता ऊर्जा की खपत को इंगित करती है - चमक नहीं। एल ई डी जैसी दक्षता-केंद्रित प्रौद्योगिकियां प्रति वाट अधिक लुमेन का उत्पादन करती हैं, जिसका अर्थ है कि एक अच्छी तरह से डिजाइन किया गया 6-वाट एलईडी वास्तव में 9-वाट के बल्ब को मात दे सकता है। ऊर्जा-कुशल शीतलन के लाभ व्यक्तिगत बचत से कहीं अधिक हैं। पर्यावरण की दृष्टि से, ये ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने में योगदान करते हैं, पेरिस समझौते के तहत भारत की प्रतिबद्धता का समर्थन करते हैं।

रक्षा निर्यात में ताकत बनकर उभरेगा भारत

'ब्रह्मोस मिसाइल को रूस के सहयोग से भारत ने विकसित किया है, इसलिए पश्चिमी देशों में इसके विपणन में कुछ समस्याएं आ सकती हैं'

पाकिस्तान की आतंकवादी गतिविधियों के खिलाफ भारत द्वारा छेड़े गए युद्ध के केवल चार दिनों के बाद, हालांकि युद्धविराम ने इस आतंकवादी राष्ट्र को और अधिक नुकसान से बचा लिया है, लेकिन इस छोटी सी अवधि में पाकिस्तान को निश्चित रूप से भारी नुकसान उठाना पड़ा है। और अगर हम संघर्ष के इन चार दिनों को देखें, तो भारत निश्चित रूप से अपनी रक्षा क्षमताओं, विशेष रूप से स्वदेशी रक्षा उपकरणों को वैश्विक स्तर पर अपने संबंधित श्रेणियों में सर्वश्रेष्ठ के बराबर या उससे भी बेहतर प्रदर्शित करने में सक्षम रहा है। भारत सरकार के प्रेस सूचना ब्यूरो के अनुसार, 'ऑपरेशन सिंदूर ने भारतीय प्रणालियों द्वारा शत्रु की प्रौद्योगिकियों को बेअसर करने के ठोस सबूत भी पेश किए- चीनी पीएल-15 हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइलों, तुर्की मूल के यूएवी, लंबी दूरी के रॉकेट, क्वाडकॉप्टर और वाणिज्यिक ड्रोन के टुकड़े बरामद किए गए।' पीआईबी आगे कहता है, 'जिन्हें बरामद किया गया और उनकी पहचान की गई, जिससे पता चलता है कि पाकिस्तान द्वारा विदेशों से आपूर्ति किए गए उन्नत हथियारों का फायदा उठाने के प्रयासों के बावजूद, भारत का स्वदेशी वायु रक्षा और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध नेटवर्क बेहतर बना हुआ है।' गौरतलब है कि भारत का रक्षा निर्यात 2013-14 में 686 करोड़ रुपए से बढक़र 2023-24 में 21083 करोड़ रुपए हो गया, और 2024-25 में यह 23622 करोड़ रुपए हो गया। अगले वर्ष के लिए इसका लक्ष्य 35000 करोड़ रुपए के रक्षा उपकरण निर्यात करना है। भारत अब इटली, मालदीव, रूस, श्रीलंका, यूएई, फिलीपींस, सऊदी अरब, पोलैंड, मिस्र, इजरायल, स्पेन और चिली सहित 85 से अधिक देशों को निर्यात करता है।

भारत द्वारा निर्यात किए जाने वाले प्रमुख रक्षा उपकरणों में शामिल हैं- आकाश- सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणाली, जिसे आर्मेनिया जैसे देशों को निर्यात किया गया है और सूडान में प्रदर्शित किया गया। ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल, जिसे फिलीपींस को निर्यात किया जा रहा है और अन्य दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों ने भी इसमें रुचि दिखाई है (सौदों पर हस्ताक्षर किए जा रहे हैं)। पिनाका मल्टी-बैरल रॉकेट लांचर, जिसे आर्मेनिया को निर्यात किया गया, 155 मिमी आर्टिलरी गन, जिसे आर्मेनिया को निर्यात किया गया, जो उन्नत आर्टिलरी प्रणालियों में भारत की क्षमताओं को उजागर करता है। डोर्नियर-228 विमान, जिसे परिवहन और निगरानी भूमिकाओं के लिए विभिन्न देशों को निर्यात किया गया। हालांकि, इन रक्षा वस्तुओं की विभिन्न देशों में पहले से ही मांग है, लेकिन ऑपरेशन सिंदूर के बाद परिदृश्य भारत के रक्षा निर्यात के पक्ष में और भी बदल गया है। भारत अब अधिक रक्षा सामान बेचने की बेहतर स्थिति में है। इस ऑपरेशन ने न केवल भारत की सैन्य साख को बढ़ाया है, बल्कि स्वदेशी रूप से विकसित रक्षा प्रणालियों की विश्वसनीयता और प्रभावशीलता का जीवंत प्रदर्शन भी किया है। कैसा रहा प्रदर्शन? पीएम नरेंद्र मोदी ने भी कहा है कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हमारे मेड इन इंडिया हथियारों की प्रामाणिकता साबित हुई है। आज दुनिया देख रही है कि 21वीं सदी के युद्ध में मेड इन इंडिया रक्षा उपकरणों का समय आ गया है। भारत ने अपनी क्षमताओं का शानदार प्रदर्शन किया है और नए युग के युद्ध में अपनी श्रेष्ठता साबित की है। इसने भारत को स्वदेशी हथियारों और रक्षा प्रणालियों को कार्रवाई में प्रदर्शित करने का एक दुर्लभ अवसर प्रदान किया है। वास्तव में, हम युद्ध के मैदान में भारत के वर्तमान कार्य को दुनिया में भारत निर्मित हथियारों के प्रदर्शन को प्रदर्शित करने वाला एक प्रचार अभ्यास कह सकते हैं, क्योंकि हम कह सकते हैं कि वे परीक्षण केवल मैदान में नहीं बल्कि चीन और तुर्की जैसी प्रमुख सैन्य शक्तियों द्वारा समर्थित वास्तविक युद्ध जैसी स्थिति में सिद्ध हुए हैं। आकाश मिसाइल सिस्टम पर इकोनॉमिक टाइम्स लिखता है कि भारत-पाकिस्तान तनाव के बीच, आकाश मिसाइल ने अपनी 'अग्नि परीक्षा' पास कर ली है। उल्लेखनीय है कि आकाश मिसाइल रक्षा प्रणाली भारत की स्वदेशी प्रणाली है, जिसने हाल ही में भारत-पाकिस्तान संघर्ष के दौरान अपनी प्रभावशीलता का प्रदर्शन किया है। इस प्रणाली को भारत द्वारा महत्वपूर्ण निवेश के साथ 15 वर्षों में विकसित किया गया है। आकाश ने आने वाले ड्रोन और मिसाइल को सफलतापूर्वक रोक दिया और भारत की रक्षा क्षमताओं को मजबूत करते हुए युद्ध क्षेत्र में अपनी ताकत साबित की।

उल्लेखनीय है कि आर्मेनिया पहला देश है जिसने 6000 करोड़ रुपए की लागत से 15 आकाश मिसाइल प्रणाली का ऑर्डर दिया था और पहली खेप पिछले साल ही भेजी जा चुकी है। लेकिन संघर्ष के दौरान आकाश ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित किया है। इस प्रणाली को डा. एपीजे अब्दुल कलाम के कुशल मार्गदर्शन में विकसित किया गया था, जो भारत के मिसाइल मैन के रूप में लोकप्रिय हैं। एक और महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि भारत केवल 500 करोड़ रुपए के मामूली निवेश के साथ इस बेहद प्रभावी मिसाइल रक्षा प्रणाली को विकसित करने में सक्षम रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार आकाश किसी भी दिशा से वास्तविक समय में कई लक्ष्यों को ट्रैक और भेद सकता है। यह 70 किलोमीटर दूर से एक मिसाइल का पता लगा सकता है और इसे 30 किलोमीटर पर नष्ट कर सकता है। ऐसा कहा जाता है कि आकाश और एस-400 ट्रायम्फ सहित भारत की रक्षा प्रणाली अभेद्य दीवार की तरह खड़ी रही। अब जब आकाश मिसाइल प्रणाली की सफलता संदेह से परे साबित हो चुकी है, सीसे में भारत दुनिया भर से भारी मात्रा में ऑर्डर की उम्मीद कर सकता है। अगर हमें सिर्फ 200 मिसाइलों के लिए भी ऑर्डर मिलते हैं तो इससे 30000 करोड़ रुपए का राजस्व मिल सकता है। ब्रह्मोस : भारत की ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल भारत-पाकिस्तान संघर्ष के दौरान पहली बार युद्ध के मैदान में दिखी, जब इसे 10 मई 2025 को उपयोग में लाया गया। बताया जाता है कि भारतीय वायु सेना ने पाकिस्तान द्वारा भारत के हवाई क्षेत्र का उल्लंघन करने के प्रयास के जवाब में पाकिस्तान के अंदर कई रणनीतिक स्थानों को निशाना बनाया। हालांकि, भारत सरकार या भारतीय सेना ने इसकी पुष्टि नहीं की है, लेकिन संघर्ष अवधि के दौरान ही, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने लखनऊ में ब्रह्मोस एकीकरण और परीक्षण केंद्र का उद्घाटन किया। यह पता चला है कि 12 जून 2001 को इसके सफल परीक्षण के बाद ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल का पहली बार इस्तेमाल ऑपरेशन सिंदूर के दौरान ही किया गया था। ब्रह्मोस मिसाइल को भारत और रूस ने मिलकर विकसित किया है और यह दो चरणों वाली मिसाइल है।

पहले चरण में यह ध्वनि की गति से भी अधिक गति से चलती है और फिर मारक हिस्सा अलग होकर दूसरे चरण में यह ध्वनि की गति से तीन गुना अधिक गति से लक्ष्य पर पहुंचता है। ऐसा माना जा रहा है कि ब्रह्मोस मिसाइल ने अपने लक्ष्य पर बहुत ही सटीक निशाना लगाया है और पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचा है। ब्रह्मोस मिसाइल को रूस के सहयोग से भारत ने विकसित किया है, इसलिए पश्चिमी देशों में इसके विपणन में कुछ समस्याएं आ सकती हैं। लेकिन निश्चित रूप से, ब्रह्मोस की सिद्ध सफलता के कारण इसके बाजार में वृद्धि हो सकती है। सीसीपीआरआई (सिपरी) के अनुसार, वर्ष 2020 और 2024 के बीच रक्षा वस्तुओं का वैश्विक निर्यात सालाना 138 बिलियन अमरीकी डॉलर रहा है। शीर्ष पांच हथियार निर्यातक देश अमरीका, फ्रांस, रूस, चीन और जर्मनी हैं, जिनकी हिस्सेदारी क्रमशः 43, 9.6, 7.8, 5.9 और 5.6 फीसदी है। सामूहिक रूप से, इन पांच देशों के पास इस अवधि के दौरान दुनिया के हथियारों के निर्यात का लगभग 72 फीसदी हिस्सा था। समझना होगा कि वैश्विक रक्षा निर्यात पर अब कुछ खिलाडियों का दबदबा नहीं रह गया है।

-डा. अश्वनी महाजन

मरियम मिर्जाखानी की कहानी: गणित की रानी

ईरान में प्रारंभिक जीवन मरियम मिर्जाखानी का जन्म 1977 में ईरान के तेहरान में हुआ था. एक बच्चे के रूप में, उसने खुद को एक प्रतिभाशाली नहीं समझा। वास्तव में, वह गणित की समस्याओं को हल करने की तुलना में उपन्यास पढ़ने और कहानियां लिखने में अधिक रुचि रखती थी। वह अपने देश के लिए बड़ी मुश्किल का समय ईरान-इराक युद्ध के दौरान बड़ी हुई।

पहले तो मरियम ने गणित में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया. लेकिन एक दिन, मिडिल स्कूल में, उसका भाई एक गणित पहेली घर लाया और उसे समझाया। उस पल ने उसकी जिज्ञासा को जन्म दिया - और तब से, वह झुका हुआ था।

ब्रेकिंग बैरियर मरियम ने उपहार में दी गई लड़कियों के लिए एक स्कूल में भाग लिया, जहां वह खिलने लगी। उसने गणित प्रतियोगिताओं में प्रवेश करना शुरू कर दिया और जल्द ही भाग लेने वाली पहली ईरानी लड़कियों में से एक बन गई - और अंतर्राष्ट्रीय गणितीय ओलंपियाड में स्वर्ण पदक जीते। 1995 में, उन्होंने एक आदर्श 42/42, एक असाधारण उपलब्धि हासिल की।

यह ईरानी लड़कियों के लिए एक शक्तिशाली क्षण था: एक ऐसे समाज में जहां महिलाओं को अक्सर सीमाओं का सामना करना पड़ता था, मरियम प्रतिभा और शांत आत्मविश्वास के साथ रूढ़ियों को तोड़ रही थी।

ईरान से हार्वर्ड तक हाई स्कूल के बाद, उन्होंने ईरान के शरीफ विश्वविद्यालय में गणित की पढ़ाई की, फिर पीएचडी करने के लिए छात्रवृत्ति अर्जित की। डी संयुक्त राज्य अमेरिका में हार्वर्ड विश्वविद्यालय में। उनके पर्यवेक्षक, कर्टिस मैकमुलेन (खुद एक फील्ड मेडलिस्ट), उनके रचनात्मक दृष्टिकोण से चकित थे। मरियम ज्यामिति को अन्य तरीकों से नहीं देख सकती थीं। उसके पास तर्क, कल्पना और दृश्य सोच को संयोजित करने की एक दुर्लभ क्षमता थी।

उनका शोध हाइपरबोलिक ज्यामिति, रीमैन सतहों और मोडुली रिक्त स्थान जैसे अमूर्त क्षेत्रों पर केंद्रित है - ऐसे क्षेत्र जो बताते हैं कि आकार और स्थान बेहद जटिल आयामों में कैसे व्यवहार करते हैं। ये ऐसे विषय हैं जिन्हें समझने के लिए अधिकांश गणितज्ञ भी संघर्ष करते हैं।

फील्ड्स मेडल जीतना 2014 में, मरयम मिर्जाखानी पहली महिला बनीं और फील्ड्स मेडल जीतने वाली पहली ईरानी, गणित में सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार (जिसे अक्सर ₹गणित का नोबेल पुरस्कार₹ कहा जाता है)।

यह ऐतिहासिक था - न केवल उसके लिए, बल्कि हर जगह विज्ञान में महिलाओं के लिए।

विनम्र और मानव अपनी प्रतिभा के बावजूद, मरियम शांत, विनम्र और गहराई से मानव थी। उसने एक बार कहा था:

₹आपको गणित की सुंदरता को देखने के लिए कुछ ऊर्जा और प्रयास खर्च करने होंगे।₹

वह अक्सर फर्श पर कागज की विशाल चादरों पर अपने विचारों को खींचकर, रंगीन मार्करों में स्केचिंग करके काम करती थी। उनकी बेटी को लगा कि वह एक कलाकार है। और एक तरह से, वह सिर्फ पेंट के साथ नहीं, बल्कि संख्याओं और आकृतियों के साथ थी।

एक जीवन जो प्रेरणा देता रहता है दर्दनाक रूप से, मरियम की मृत्यु 2017 में स्तन कैंसर से लड़ाई के बाद सिर्फ 40 साल की उम्र में हुई थी। लेकिन उनकी विरासत पर रहता है।

उसने गणित में लड़कियों और महिलाओं के लिए दरवाजे खोले। उसने दिखाया कि रचनात्मकता और दृढ़ता प्रारंभिक सफलता से अधिक मायने रखती है। और उसने दुनिया को याद दिलाया कि गणित केवल सूत्रों के बारे में नहीं है - यह सुंदरता, कल्पना और खोज के बारे में है।

क्यों उसकी कहानी प्रेरणादायक और शैक्षिक है लचीलापनः मरियम राजनीतिक उथल-पुथल, लिंग बाधाओं और स्वास्थ्य संघर्षों के बावजूद सफल रही।

स्वर्गीय ब्लूमरः वह एक बच्चा कौतुक नहीं था- वह मध्य विद्यालय में गणित के लिए अपने प्यार की खोज की ।

प्रतिनिधित्वः वह STEM में महिलाओं और लड़कियों के लिए आशा और संभावना का एक वैश्विक प्रतीक बन गया।

गणित के लिए प्यारः उसने गणित को एक उपकरण के रूप में नहीं, बल्कि एक कला रूप के रूप में देखा - पैटर्न और सुंदरता की दुनिया।

छात्रों और शिक्षकों के लिए सबक पहले संघर्ष करना ठीक है। क्या मायने रखता है जिज्ञासा और निरंतरता।

प्रोत्साहन और अवसर दिए जाने पर लड़कियां और लड़के समान रूप से गणित में चमक सकते हैं।

गणित केवल गणना नहीं है - यह सोचने, खोज करने और बनाने का एक तरीका है

घटती स्मरण शक्ति चिंतनीय

हाल में एप के माध्यम से टैक्सी सेवा प्रदान करने वाली कंपनी 'उबर' द्वारा देश के पांच शहरों में किए गए एक सर्वेक्षण में यह बात सामने आई है कि लोगों की स्मरण शक्ति में गिरावट आ रही है। इस सर्वे में मुंबई शहर पहले स्थान पर है, जहां लोगों की याददाश्त सबसे कमजोर पाई गई है। 'उबर' का कहना है कि उनकी टैक्सी में लोग अक्सर अपना सामान भूलकर चले जाते हैं। यह सर्वेक्षण सामान्य परिस्थितियों में स्वस्थ लोगों की स्मृति के क्षरण को लेकर चिंताजनक है, जो कि घर, दफ्तर और आम जीवन में भी समस्याएं उत्पन्न कर रहा है। यह विचारणीय है कि इंसानों के लिए याद रखने का अर्थ केवल अतीत की स्मृतियों तक सीमित नहीं है। रोजमर्रा की जिंदगी में भी कई महत्वपूर्ण चीजों को याद रखना आवश्यक होता है। मन-मस्तिष्क की सजगता के बिना संवाद और दैनिक कार्यों को पूरा करना कठिन हो जाता है। ऐसे में सामान्य गतिविधियों और सामानों को भूल जाना एक बड़ा खतरा बन गया है। कमजोर स्मरण शक्ति दुर्घटनाओं का कारण बन सकती है। बच्चे हों या बड़े, लोग पलभर में भूल जाते हैं कि उन्हें क्या करना था। अब तो अपना फोन नंबर या पता याद रखना भी मुश्किल हो गया है। रास्ते और सीमा चिह्न भी याद नहीं रहते, जिससे जीवन में कई समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। पहले बुजुर्गों की समस्या मानी जाने वाली यह स्थिति अब हर आयुवर्ग को प्रभावित कर रही है। हाल के वर्षों में स्मार्ट गैजेट्स के अत्यधिक उपयोग ने भी याद रखने की क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव डाला है। तकनीकी प्रगति ने विजुअल माध्यमों की भूमिका को बढ़ा दिया । हर मुट्ठी में मौजूद जानकारियों की स्क्रीन ने दिमाग पर जोर डालकर सोचने और याद रखने की आवश्यकता को कम कर दिया है। क्लिक भर में मिलती या खोजी जाने वाली हर सूचना, विवरण और तस्वीर दिमाग को सुस्त बनाने वाली गतिविधि साबित हो रही है। स्क्रीन स्क्रॉलिंग में व्यस्त लोग अपने-अपने निर्जन कोनों में सिमट गए हैं, जिससे सामाजिकता का दायरा घटा है। शारीरिक, मानसिक और सामाजिक गतिविधियों में कमी भी स्मृति कम होने के जोखिम को बढ़ा रही है। इस तकनीकी विस्तार के दौर में जीवनशैली में बदलाव के बिना स्मरण शक्ति में गिरावट की समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता। सामाजिक और शारीरिक सक्रियता, कुछ नया सीखने की मानसिक कसरत, स्मार्ट गैजेट्स के उपयोग में अनुशासन और प्रकृति से जुड़ाव इस समस्या का समाधान कर सकते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है। कि स्मरण शक्ति में गिरावट एक गंभीर चिंता का विषय है, जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। हमें अपनी जीवनशैली में सुधार लाने की आवश्यकता है, ताकि हम इस समस्या का सामना कर सकें और अपनी याददाश्त को बेहतर बना सकें।'

-विजय गर्ग

प्रसन्नता के प्रतीक

मानव सभ्यता के आरंभ से ही दुख-सुख जीवन के साथी रहे हैं। यह प्राकृतिक स्थिति है कि हम खुशी के अनेक पलों को बखूबी जीते हैं, लेकिन दुख की हल्की छाया से भी हम असहज और चिंतित हो जाते हैं। सुख और दुख एक ऐसा अस्थायी चक्र है, जिससे संसार का कोई भी प्राणी मुक्त नहीं है। कई शोध प्रबंधों ने यह सिद्ध किया है कि खुशी वह भाव तरंग है जिससे व्यक्ति चिंता, तनाव एवं बीमारियों से बहुत हद तक मुक्त रहता है। व्यक्ति की दिनचर्या में यह साक्षात रूप में देखा गया है कि खुश रहना भागदौड़ भरी जिंदगी और एक दूसरे से आगे बढ़ने की अस्वस्थ प्रतियोगिता ने लोगों के चेहरे पर खुशी कम कर दी है। भौतिक व्यामोह ने जीवन के सबसे अहम पहलुओं में से खुशी के पल को नजरअंदाज किया है। मनोचिकित्सकों का कथन है कि प्रसन्न व्यक्ति की मानसिक स्थिति अच्छी होती है, वे अपने निर्धारित दायित्व पालन में सफल होते हैं, परिवार और समाज के कार्यों में वे अच्छी तरह हाथ बंटाते हैं और कई शारीरिक व्याधियों से वे बचे भी रहते हैं। वैश्विक प्रसन्नता सूचकांक के ताजा आंकड़े के मुताबिक, 147 देशों में भारत का स्थान 118 वां है, जबकि वर्ष 2022 में हम 92 वें स्थान पर थे। तो क्या खुशियों का पैमाना क्षरण की ओर अग्रसर है? इसके क्या कारण हैं? खुशी हमारे चिंतन स्वभाव का एक सांवेगिक हिस्सा है, जिसे हम महसूस करते हैं। दुखी होने के कई कारणों में वैसी घटनाएं मानी जाती हैं जो हमारे वैचारिक भूमि से मेल नहीं खातीं, जबकि खुश रहने की स्थितियों में हमारे मन की अनुकूलता की अनुभूति से तारतम्य बनाए रखता है।

अक्सर हम दैनिक जीवन में होने वाली मामूली बातों से अपनी खुशी खो देते हैं । उस समय थोड़े धैर्य से हम यह नहीं विचार करते कि किसी अचानक उपजी स्थिति की गहराई में क्या मर्म है। जब हम खुशी खोते हैं, उस समय हमारे मानसिक प्रवाह की दिशा में उदासी, चिड़चिड़ापन और निष्क्रियता के तरंग उत्पन्न होने लगते हैं, जिसे सामान्य होने में अधिक समय लगता है। ऐसा ही मन का स्वभाव है, जो छोटी-मोटी बातों को बढ़ा-चढ़कर जीवन के अनुभूति आंगन में प्रवेश कर जाता है, जबकि जो खुशी अंतर्चेतना में मौजूद है, उस पर हमारा ध्यान नहीं जाता। हालांकि खुशी सिर्फ एक व्यक्ति के आनंदित होने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सामूहिक संचारी गुण है। पारिवारिक आंगन में यह आमतौर पर देखने को मिलता है कि अगर घर का एक सदस्य खुश है और शेष कई सदस्य दुखी हैं, तो एक की निजी खुशी में स्थायीपन नहीं हो सकता।

हमारे आसपास के लोगों का सुख-दुख हमारी स्वयं की प्रसन्नता को निश्चित तौर पर प्रभावित करता है । इसी परिप्रेक्ष्य में सभी के सुखी और आनंदित रहने के लिए 'सर्वे भवंतु सुखिनः' के पुनीत संदेश लोक जीवन में एक अमूल्य स्थान रखे हुए है। कभी-कभी परिवार या समाज में कोई अप्रिय घटना के कारण अधिकांश लोग दुखी हो जाते हैं, जिसमें हमारी आंतरिक स्थिरता और साहस पीड़ित के लिए सहारा और संबल बन जाती है। ऐसे पल में खुशी के भाव निश्चित रूप में प्रकट नहीं होते, बल्कि वह अचेतन आवरण का तात्कालिक हिस्सा हो जाता है । हमारी खुशी अन्य पर आश्रित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह उनके उत्थान और सहजता का कारण होना चाहिए ।

लोक मान्यता है कि हर व्यक्ति अपने कर्म के अनुसार ही सुख या दुख का भागीदार बनता है। शायद इस तर्क के पीछे यह उद्देश्य रहा हो कि व्यक्ति अच्छे व्यवहार और आचरण का प्रदर्शन करना अपनी दैनंदिनी में शामिल करे। कुछ ऐसे भी दृष्टांत देखे जाते हैं जब किसी को खुश करने के लिए कुछ भी चेष्टा करें, वे दुखी ही बने रहते हैं और यह भी कह देते हैं कि दुख मेरे भाग्य में लिखा हुआ है । यह हालत बाद में मानसिक अवसाद के रूप में प्रकट होने लगता है । अनेक दार्शनिकों ने कहा है कि खुशी बिल्कुल निशुल्क है जो हम सभी के अंतर्मन में छिपा हुआ है। कुछ लोग कहते हैं कि खुशी धन, दौलत और भौतिक संसाधनों से प्राप्त होती है। कई लोग नियमित रूप से पर्यटन प्रकल्प से जुड़कर अपने को तरोताजा रखते हैं जो खुशी का मनोहारी बिंदु है। हमारा मन एक कामना की पूर्ति होते ही दूसरी इच्छा की पूर्ति के लिए सचेष्ट हो जाता है। इसकी तीव्रता हमें कई ऐसे उपसर्ग से घेर लेती है, जब हम अपनी आंतरिक प्रसन्नता को विचलन की दिशा प्रदान कर देते हैं ।

आमतौर पर किसी के कटु या अप्रिय बोल हमें असहज करते हुए क्रोध पैदा करते हैं । बौद्ध दर्शन का एक कथन है कि व्यक्ति को नकारात्मक वाक्यों को तुरंत नजरअंदाज कर देना चाहिए। नवजात शिशु मन भी सुख-दुख की कसौटी पर परखे गए हैं। कोई बात उसके मनोनुकूल न होने पर वह रोने लगता है, लेकिन ज्यों ही उसे मन के अनुसार कोई खिलौने दिए जाते हैं, वह खुश होकर मुस्कुरा देता है ।

जीवन की जटिलता के वर्तमान दौर में खुश रहना आसान भले नहीं लगता, लेकिन यह असंभव नहीं है। हमारी दिनचर्या में अनेक प्रसंग उपस्थित होते हैं जो हमारी प्रसन्नता के पर्याय बन सकते हैं। खुशी अपने भीतर भी होती है । जरूरत है कि हम अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों के निर्वहन में सहजता और सरलता लाएं। छोटी-मोटी प्रतिकूल स्थितियों में घबराएं नहीं । हिम्मत बनाए रखें, यह सोचकर कि जरा भी धैर्य खोने से हमारी मानसिक सक्रियता बाधित हो सकती है और उसके कारण आगे के दायित्व पालन में हम शिथिल हो सकते हैं। अपने स्वजनों, मित्रों और पड़ोसियों के साथ मिल कर उनके प्रति करुणा और दयालुता के भाव प्रदर्शन से खुशी के भंडार में वृद्धि हो सकती है। पशु पक्षी को पूरे दिन में जितने आहार मिलते हैं, वे उसी में मगन रहते हैं और दूसरे दिन के लिए कुछ संग्रह नहीं करते। हमें कुछ दिनों तक प्रयोग कर यह मीमांसा करनी चाहिए कि खुशी का पैमाना क्या है।

-विजय गर्ग

यह वक्त एकजुटता का है

1947-48 के भारत-पाक युद्ध में हमारे करीब 6000 जवान 'शहीद' हुए थे। 1965 के युद्ध में यह संख्या 3500 के करीब रही और 1971 के भारत-पाक युद्ध में भी करीब 3000 सैनिक शहीद हुए। 1999 के कारगिल युद्ध में भी यह संख्या 527 तक पहुंच गई। देश के अनुभवी रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार, विभिन्न युद्धों, संघर्षों या किसी अन्य ऑपरेशन के दौरान 15,000 से अधिक सैनिक शहीद हो चुके हैं। क्या देश को यह एहसास है कि कितने परिवार अनाथ हुए होंगे? क्या कांग्रेस ये तमाम आंकड़े जानती है, क्योंकि इन युद्धों के कालखंड में अधिकतर वह ही सत्तारूढ़ थी? क्या कांग्रेस देश को बताएगी कि इन शहीद सैनिकों को लेकर संसद के कितने विशेष सत्र बुलाए गए? शहादत के आंकड़े किसी संसदीय रिकॉर्ड में दर्ज हैं? कितने जांबाज जवान घायल हुए होंगे और अपाहिज हो गए होंगे? क्या देश को यह भयानक यथार्थ किसी ने बताया है? लोकतंत्र और सरकार की गतिविधियों, कार्रवाइयों को जानने का अधिकार इतना शिथिल और संकीर्ण नहीं हो सकता। युद्ध और सामान्य, सार्वजनिक मुद्दों के बीच गहरे अंतर होते हैं। सवाल है कि कांग्रेस यह जान कर कौन-सा राजनीतिक लक्ष्य हासिल कर लेगी कि भारत-पाक के हालिया संघर्ष के दौरान हमारे कितने लड़ाकू विमान धराशायी हुए? हमारी वायुसेना ने आतंकियों के 9 बड़े ठिकाने मिट्टी में मिला दिए, करीब 170 आतंकियों को ढेर भी किया, पाकिस्तान के महत्वपूर्ण एयरबेस, रडार सिस्टम और वायु रक्षा प्रणालियां इस कदर तबाह कर दी गईं कि 4-5 साल तक पाकिस्तान युद्ध की सोच भी नहीं सकता। क्या कांग्रेस खुश नहीं है कि हमारी सेनाओं ने तय लक्ष्य हासिल किए और दुनिया के विशेषज्ञ भारत की निर्णायक जीत के विश्लेषण कर रहे हैं? अब चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) की आड़ में छिप कर कांग्रेस मोदी सरकार और सेना को निशाना बनाने पर आमादा है। बेशक सीडीएस जनरल अनिल चौहान ने एक साक्षात्कार में स्वीकार किया है कि हालिया संघर्ष में शुरुआत के दो दिनों में हमें हवाई नुकसान उठाना पड़ा। नंबर अहम नहीं हैं, लेकिन हमने गलतियां सुधारीं और अपने टारगेट पर हमला बोल कर उसे तबाह कर दिया। डीजीएमओ (एयर ऑपरेशन) एयर मार्शल एके भारती ने भी लगभग यही बात कही थी कि जंग में नुकसान अपरिहार्य है, लेकिन सीडीएस ने पाकिस्तान के दुष्प्रचार, 5 राफेल विमान गिराने के दावे को सिरे से खारिज कर दिया। कांग्रेस सीडीएस के बयान का एक छोर पकड़ कर सवाल करते हुए संदेह जताने पर क्यों तुली है? उसकी संसद के विशेष सत्र बुलाने में क्या दिलचस्पी है? हम पहले भी कह चुके हैं कि यदि सामूहिक विपक्ष संसद सत्र की मांग कर रहा है, तो सरकार को मॉनसून सत्र कुछ पहले ही बुला लेना चाहिए, लेकिन अब कांग्रेस चाहती है कि प्रधानमंत्री मोदी सीडीएस के बयान पर संसद में स्पष्टीकरण दें। कांग्रेस को पता होगा कि अभी 'ऑपरेशन सिंदूर' स्थगित है, खत्म नहीं हुआ है। युद्ध की रणनीति अति गोपनीय विषय है, उसे संसद के मंच पर भी सार्वजनिक नहीं किया जा सकता। सीडीएस ने रणनीति की ओर संकेत किया है। क्या प्रधानमंत्री के स्पष्टीकरण के जरिए कांग्रेस उस रणनीति का खुलासा करवा देना चाहती है, जो पाकिस्तान के लिए फायदेमंद हो सकती है। पाकिस्तान हमारी सैन्य रणनीति जानने के बाद अपनी रणनीति दोबारा बना सकता है।

मासूमियत की चीखें और हमारी चुप्पी: कब टूटेगा ये सन्नाटा?

दुनिया तब तक निर्दोष नहीं कहलाएगी, जब तक किसी मासूम बच्चे की चीखें अंधेरे में गूंजती रहें और समाज चुपचाप आंखें फेर ले। बाल यातना और अवैध तस्करी हमारे समय का सबसे घृणित अपराध है, जो मानवता के माथे पर काले धब्बे की तरह उभरता है। क्या हम उस दुनिया का हिस्सा बनना चाहते हैं, जहां बच्चों की मासूम हंसी डर की सिसकियों में बदल जाए? जहां उनके सपनों के नन्हें कदमों को जंजीरों में जकड़ दिया जाए? 4 जून, बाल यातना एवं अवैध तस्करी के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय दिवस, हमें यही सवाल पूछता है और एक जवाब की मांग करता है — न केवल शब्दों में, बल्कि कर्मों में।

आज विश्व भर में लाखों बच्चे शोषण, दमन और यातना का शिकार हो रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) के 2020 के अनुमान के अनुसार, विश्व में लगभग 16 करोड़ बच्चे बाल श्रम में फंसे हैं, और लाखों बच्चे तस्करी का शिकार होकर यौन शोषण, जबरन मजदूरी, सशस्त्र संघर्षों में सैनिक बनने, या घरेलू दासता जैसे अमानवीय हालातों में जीने को मजबूर हैं। यूनिसेफ की एक रिपोर्ट बताती है कि हर साल करीब 12 लाख बच्चे मानव तस्करी का शिकार बनते हैं, जिनमें से अधिकांश लड़कियां यौन शोषण के लिए तस्करी की जाती हैं। ये आंकड़े केवल संख्या नहीं, बल्कि उन मासूमों की चीखें हैं, जिनका बचपन छीन लिया गया है। ये बच्चे न केवल अपने अधिकारों से वंचित हैं, बल्कि उनकी पहचान, स्वतंत्रता और भविष्य भी कुचल दिए गए हैं।

यह अपराध इतना कपटपूर्ण है कि यह अक्सर 'अदृश्य' रहता है। तस्कर संगठित गिरोहों के रूप में काम करते हैं, जो गरीबी, अशिक्षा और सामाजिक उदासीनता का फायदा उठाते हैं। भारत जैसे देश में, जहां सामाजिक-आर्थिक असमानता और जागरूकता की कमी व्यापक है, यह समस्या और भी गहरी है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के 2022 के आंकड़ों के अनुसार, भारत में हर साल हजारों बच्चे लापता हो जाते हैं, जिनमें से कई तस्करी के शिकार बनते हैं। कई बार माता-पिता, बेहतर भविष्य के वादे में धोखा खाकर, अपने बच्चों को दलालों के हवाले कर देते हैं। फिर वे बच्चे कभी वापस नहीं लौटते — सिवाय किसी अखबार के छोटे से कॉलम या पुलिस रिकॉर्ड की ठंडी फाइलों में।

बाल तस्करी और यातना का यह घिनौना धंधा केवल कुछ अपराधियों तक सीमित नहीं है; यह एक वैश्विक तंत्र है, जो सीमाओं, संस्कृतियों और समाजों को लांघता है। यह अपराध हमारे आसपास, हमारे शहरों, गांवों और गलियों में पनपता है। गरीबी और बेरोजगारी इसकी जड़ें मजबूत करते हैं, जबकि अज्ञानता और उदासीनता इसे पनपने का मौका देती हैं। फिर भी, समाज का एक बड़ा हिस्सा इसे 'दूर की समस्या' मानकर चुप रहता है। लेकिन सच यह है कि जब तक हम इस सच को स्वीकार नहीं करते कि यह हमारी साझा जिम्मेदारी है, तब तक यह अंधेरा हमारी सभ्यता को निगलता रहेगा।

इसके खिलाफ लड़ाई केवल कानूनों तक सीमित नहीं हो सकती। भारत में प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन फ्रॉम सेक्सुअल ऑफेंसेस (पॉक्सो) एक्ट, जुवेनाइल जस्टिस एक्ट, और मानव तस्करी निवारण अधिनियम जैसे कानून मौजूद हैं, लेकिन इनका प्रभावी कार्यान्वयन अभी भी एक चुनौती है। कानून तभी सार्थक होते हैं, जब समाज उनकी भावना को अपनाए। इसके लिए हमें एक जागरूक, संवेदनशील और सक्रिय समाज की जरूरत है। हर स्कूल, हर पंचायत, हर मोहल्ले में यह संदेश गूंजना चाहिए कि कोई भी बच्चा बिकाऊ नहीं है। शिक्षा और जागरूकता इस लड़ाई का सबसे मजबूत हथियार हैं। जब हर व्यक्ति यह समझ लेगा कि बच्चों का शोषण केवल एक अपराध नहीं, बल्कि मानवता के खिलाफ जंग है, तभी इसकी जड़ें कमजोर होंगी।

आज के डिजिटल युग में बाल तस्करी ने नए रूप ले लिए हैं। इंटरनेट और सोशल मीडिया बच्चों को फंसाने का बड़ा जरिया बन गए हैं। साइबर अपराधी मासूमों को झूठे वादों, दोस्ती के जाल, या डराने-धमकाने के जरिए फंसाते हैं। यूनाइटेड नेशंस की एक हालिया रिपोर्ट के अनुसार, ऑनलाइन बाल शोषण की घटनाएं पिछले एक दशक में दोगुनी हो गई हैं। ऐसे में साइबर निगरानी को मजबूत करना और अभिभावकों को अपने बच्चों की ऑनलाइन गतिविधियों पर नजर रखने के लिए शिक्षित करना जरूरी है। साथ ही, तकनीक का सकारात्मक उपयोग, जैसे कि लापता बच्चों की तलाश में डेटाबेस और ट्रैकिंग सिस्टम, इस लड़ाई में मददगार हो सकता है।

इसके अलावा, जो बच्चे तस्करी और यातना का शिकार हो चुके हैं, उन्हें समाज में दोबारा स्थापित करने की जरूरत है। गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) और सामाजिक संस्थाओं को मनोवैज्ञानिक सहायता, शिक्षा और पुनर्वास के अवसर प्रदान करने चाहिए। भारत में 'बचपन बचाओ आंदोलन' जैसे संगठन इस दिशा में सराहनीय कार्य कर रहे हैं, लेकिन उनकी पहुंच सीमित है। सरकार, समाज और निजी क्षेत्र को मिलकर एक ऐसा तंत्र बनाना होगा, जो हर पीड़ित बच्चे तक पहुंच सके।

लेकिन सबसे बड़ा सवाल यही है — क्या हम बस चुपचाप पढ़कर आगे बढ़ जाएंगे, या सच में कुछ बदलने की हिम्मत करेंगे? जब कोई मासूम बच्चा दर्द से कराहता है और हम आंखें फेर लेते हैं, तब दोषी सिर्फ वह दरिंदा नहीं होता — हम भी उसके भागीदार बन जाते हैं। अब वक्त सिर्फ बातों का नहीं, बल्कि निर्णायक कार्रवाई का है। हमें उन मासूम आंखों में फिर से सपनों की चमक लानी है, जिनसे बचपन छीन लिया गया। हमें उन नन्हें पैरों को आज़ादी की ज़मीन पर चलने देना है, जिन्हें अब तक बर्बरता ने बेड़ियों में जकड़ा हुआ था।

हर वह हाथ जो एक मासूम को शोषण से बचाता है, हर वह आवाज जो अन्याय के खिलाफ गूंजती है — वही असली इंसानियत का प्रहरी है। एक बच्चे को बचाना सिर्फ एक जान बचाना नहीं, बल्कि पूरी मानवता के भविष्य को सुरक्षित करना है। जब इस धरती का आख़िरी बच्चा भी निडर होकर मुस्कुरा सके, जब हर बालक को उसका बचपन, उसकी शिक्षा, और अपने सपनों को उड़ान देने की आज़ादी मिल सके — तभी हम खुद को एक सभ्य समाज कहने का हक़दार होंगे। इस 4 जून, आइए एक वादा करें — हम मूक दर्शक नहीं बनेंगे, हम बदलाव की आग बनकर उठेंगे। क्योंकि किसी एक बच्चे की मुस्कान में ही वो उजाला छिपा है, जो इस दुनिया के सबसे गहरे अंधेरे को भी रोशन कर सकता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

आक्रामकता के शिकार मासूम बच्चों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस आज

हर साल 4 जून को आक्रामकता के शिकार मासूम बच्चों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाया जाता है। यह दिवस लोगों का ध्यान उन बच्चों की ओर आकर्षित करता है जो हिंसा और दुर्व्यवहार का सामना करते हैं। यह बच्चों के अधिकारों के लिए जागरूकता बढ़ाने और उन्हें हिंसा से बचाने के लिए कार्रवाई करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है।

आक्रामकता के शिकार मासूम बच्चों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस का इतिहास आक्रामकता के शिकार मासूम बच्चों के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस की स्थापना 19 अगस्त, 1982 को संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा की गई थी। यह दिवस 1982 में लेबनान और इजरायल के बीच हुए युद्ध में पीड़ित बच्चों की याद में मनाया जाता है। बता दें कि इस घटना के बाद 19 अगस्त, 1982 को यूएन की एक आपातकालीन बैठक हुई जिसमें लेबनान की स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए हर साल 4 जून को दुनियाभर के मासूम बच्चों के लिए तय किया गया। 4 जून 1982 से यह दिवस हर साल दुनियाभर में मनाया जा रहा है।

क्या है इस दिवस को मनाए जाने का उद्देश्य इस दिवस को मनाने का उद्देश्य है बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए लोगों को प्रेरित करना, दुनियाभर मने हो रहे युद्ध और हिंसा को रोकने के प्रयासों को मजबूत करना, शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक शोषण से पीड़ित बच्चों को श्रद्धांजलि देना, युद्ध और संघर्षों में बच्चों पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में जागरूकता फैलाना और बच्चों के लिए बेहतर दुनिया बनाने के लिए लोगों को प्रेरित करना।

दुनिया को सब दिखाया, पर खुद से क्या छिपाया? [तस्वीरें मुस्कराती हैं, पर भीतर कोई रोता है]

यदि सब कुछ उजागर कर दिया जाए, तो बचेगा क्या? यह सवाल एक धारदार खंजर है, जो हमारे समय के दिल को चीरता है और हमें उस खोए हुए 'मैं' की तलाश में भटकने को मजबूर करता है, जो कभी हमारी आत्मा की आवाज़ था। सोशल मीडिया का यह युग हमें एक ऐसी भूलभुलैया में ले आया है, जहाँ हर कदम पर हम अपनी निजता, अपनी संवेदनाओं और अपने वजूद को बेचकर बस एक चमकती छवि बनकर रह गए हैं। यह चकाचौंध हमें लुभाती है, लेकिन हर बार जब हम अपनी ज़िंदगी का एक टुकड़ा दुनिया के सामने परोसते हैं, हम अपने भीतर की उस अनमोल शांति को, उस 'मैं' को, थोड़ा और गँवा देते हैं।

हर सुबह अब सूरज की किरणों से नहीं, स्मार्टफोन की नीली रोशनी से शुरू होती है। आँखें खुलते ही हम इंस्टाग्राम की रील्स, ट्विटर के ट्रेंड्स और व्हाट्सएप्प के स्टेटस में डूब जाते हैं। स्टैटिस्टा (२०२३) के अनुसार, भारत में ५० करोड़ से अधिक लोग सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं, और औसतन हर व्यक्ति दिन के २.५ घंटे से ज्यादा इस आभासी दुनिया में बिताता है। हमारी ज़िंदगी अब एक परफेक्ट पोस्ट, एक वायरल रील या एक ट्रेंडिंग हैशटैग बनकर रह गई है। हम क्या खाते हैं, क्या पहनते हैं, कहाँ घूमते हैं—यह सब दुनिया को दिखाना ज़रूरी हो गया है, लेकिन हमारी आत्मा की चुप्पी, हमारे भीतर का खालीपन, वह कहीं गुम हो गया है। हमारी भावनाएँ अब कैमरे के लेंस से छनकर ही सामने आती हैं, और हमारा सच एक फिल्टर के पीछे छिप जाता है।

सोशल मीडिया ने हमें यह सिखाया है कि हमारी कीमत हमारी छवि में है, न कि हमारे वास्तविक होने में। एक परफेक्ट सेल्फी, सही कैप्शन और सैकड़ों लाइक्स—यही अब हमारी पहचान बन गई है। प्यू रिसर्च सेंटर (२०२१) की एक स्टडी बताती है कि ६४% किशोरों का आत्मसम्मान सोशल मीडिया पर उनकी छवि से प्रभावित होता है। हमारी खुशियाँ अब लाइक्स की गिनती पर टिकी हैं, और हमारा दुख तब तक अधूरा है, जब तक वह दुनिया की सहानुभूति न बटोर ले। रिश्ते, जो कभी दो दिलों की फुसफुसाहट में बसते थे, अब स्टोरीज़ और प्रोफाइल पिक्चर्स की कैद में हैं। प्यार, दोस्ती, दुख—सब कुछ अब एक 'पोस्ट' बनकर रह गया है। यह सिर्फ युवाओं की कहानी नहीं। बच्चे, जो अभी दुनिया को समझने की उम्र में हैं, टिकटॉक और यूट्यूब शॉर्ट्स के ट्रेंड्स में खोए हैं। बुज़ुर्ग, जो पहले परिवार की चौपाल पर कहानियाँ सुनाते थे, अब व्हाट्सएप्प ग्रुप्स में फॉरवर्ड्स भेजने में उलझे हैं। जर्नल ऑफ सोशल एंड क्लिनिकल साइकोलॉजी (२०२१) में प्रकाशित एक शोध बताता है कि सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग चिंता, अवसाद और आत्मसम्मान में कमी का कारण बनता है। फिर भी, हम इस मायाजाल से बाहर निकलने को तैयार नहीं। हम सब इस आभासी दुनिया के कैदी बन चुके हैं, जहाँ हर कोई 'ट्रेंड' करना चाहता है, लेकिन कोई यह नहीं पूछता कि इस दौड़ में हम अपनी आत्मा को कहाँ छोड़ आए हैं।

हमारी संस्कृति में एकांत को सदा से एक मूल्य माना गया है। गीता में कहा गया है, "आत्मा का साक्षात्कार एकांत में ही संभव है।" लेकिन आज एकांत को कमजोरी समझा जाता है। अगर कोई अपनी भावनाओं को निजी रखे, तो उसे 'एंटी-सोशल' का तमगा दे दिया जाता है। हर दुख को स्टोरी बनाना, हर खुशी को रील में ढालना, हर पल को दुनिया के सामने परोसना—यह अब ज़रूरी हो गया है। लेकिन क्या हर आंसू को कैमरे में कैद करना ज़रूरी है? क्या हर हँसी तभी पूरी है, जब उसे हज़ारों लोग देख लें? निजता वह अनमोल खज़ाना है, जो हमें हमारी आत्मा से जोड़ता है। जब हम अपनी हर बात को सार्वजनिक कर देते हैं, तो वह खज़ाना धीरे-धीरे खाली होता जाता है। सोशल मीडिया ने हमें एक स्क्रिप्टेड ज़िंदगी जीना सिखाया है। दुख को 'एस्थेटिक' होना चाहिए, खुशी को 'इंस्टाग्रामेबल'। हम जैसे हैं, वैसे दिखना अब कमजोरी माना जाता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

"दर्द से लड़ते चलो"

ज़िंदगी जब करे सवाल,
और उत्तर न मिले हर हाल,
तब भी तुम थक कर बैठो नहीं,
आँखों में आँसू हो, पर बहो नहीं।

देखा है मैंने अस्पतालों में,
साँसों को बचाने की जंग में,
कोई ज़मीन बेचता है,
कोई गहने गिरवी रखता है।
जीवन को जीने की कीमत,
हर दिन वहाँ कोई चुकाता है।

तो क्यों तुम जीवन से भागो?
क्यों यूँ ही टूट कर बिखर जाओ?
मरना नहीं चाहता मन,
वो बस दर्द से छुटकारा चाहता है।
थोड़ा रुको, थोड़ा सहो,
समय की नदी को बहने दो।

एक दिन सूरज फिर उगेगा,
अंधेरे का तम भी सिमटेगा।
वो दर्द जो असह्य लगता है आज,
कल बन जाएगा बीते कल का राज।

जो जीते हैं, वही लड़ते हैं,
जो लड़ते हैं, वही जीतते हैं।
तुम्हारा होना ही एक जीत है,
हर साँस तुम्हारी उम्मीद की रीत है।

मत करो उस अंतिम सन्नाटे की पुकार,
तुम ज़रूरी हो इस संसार।
उठो, जियो, फिर से मुस्कुराओ,
दर्द से लड़ो — खुद को गले लगाओ।

– डॉ सत्यवान सौरभ

एस.एच.ओ. आशु गल्होत्रा ने ठाणे के हरि नगर में फन वे लर्निंग एनजीओ और आरडब्लूए के सदस्यों के साथ बैठक की, जिसमें क्षेत्र में शांति बनाए रखने और चोरी जैसी घटनाओं को रोकने सहित कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई।

दुल्हन फर्जी, रिश्ता असली बेवकूफी का! फर्जी रिश्तों का व्यापार: शादी नहीं, ठगी का धंधा

भारत में शादियों को लेकर एक सांस्कृतिक उत्सव, पारिवारिक प्रतिष्ठा और भावनात्मक जुड़ाव की भावना जुड़ी होती है। लेकिन जब इस पवित्र रिश्ते को ठगों का व्यवसाय बना दिया जाए, तो यह सिर्फ एक व्यक्ति नहीं, बल्कि पूरे समाज के विश्वास की हत्या होती है। हरियाणा के हिसार से सामने आया ताज़ा मामला इसी सामाजिक बीमारी की खतरनाक तस्वीर पेश करता है — जहाँ दुल्हन, उसके माता-पिता और पूरा रिश्ता ही नकली निकला। यह घटना सिर्फ एक समाचार नहीं, बल्कि एक सामाजिक चेतावनी है: अब भी नहीं चेते तो हर घर को अपनी आबरू खुद बचानी होगी।

– प्रियंका सौरभ

हिसार पुलिस ने हाल ही में ऐसे गिरोह का पर्दाफाश किया है जो विवाह के नाम पर लोगों को ठगने का सुनियोजित कारोबार चला रहा था। आरोपी पहले से कई फर्जी शादियाँ कर चुका था। इस बार, न केवल दुल्हन नकली थी, बल्कि उसके 'माता-पिता' भी फर्जी निकले। एक भोला-भाला युवक, जो जीवनसाथी की तलाश में था, शादी के सपने लिए इस जाल में फँस गया और लौटे तो खाली जेब, टूटी उम्मीदें और गहरी मानसिक चोट के साथ।

सोचिए, जब किसी के जीवन की सबसे बड़ी खुशी को शातिर गिरोह पैसे कमाने का साधन बना लें, तब कानून और समाज की जिम्मेदारी क्या बनती है?

आंकड़ों की चिंता से ज्यादा ज़रूरत जागरूकता की

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो (NCRB) के अनुसार, हर साल भारत में हजारों लोग विवाह के नाम पर ठगी का शिकार होते हैं। 2023 में ही देशभर में लगभग 3200 से अधिक फर्जी विवाह और उनसे जुड़ी ठगी की शिकायतें दर्ज हुईं। इनमें से अधिकांश में महिला और उसके तथाकथित परिजनों ने विवाह के बाद धन, जेवर और नकद लेकर फरार होने की योजना पहले से बनाई होती है। इस बढ़ती प्रवृत्ति का सबसे दुखद पहलू यह है कि ऐसे अपराधों में शामिल महिलाएं न केवल कानून का मजाक उड़ाती हैं, बल्कि असल में शोषित और ज़रूरतमंद महिलाओं की आवाज को भी कमजोर करती हैं।

कानून की कमजोरी या सिस्टम की सुस्ती?

ऐसे मामलों में सबसे बड़ा सवाल उठता है: क्या हमारा कानूनी सिस्टम इतना सुस्त है कि शादी जैसे गंभीर और सामाजिक तौर पर महत्वपूर्ण विषय में भी फर्जीवाड़ा बेरोकटोक जारी रह सके? विवाह पंजीकरण प्रणाली को यदि सख्त और डिजिटल तरीके से लागू किया जाए, तो ऐसे 90 प्रतिशत मामलों को शुरुआती स्तर पर ही रोका जा सकता है।

इसके लिए ज़रूरी है:

1. आधार वेरिफिकेशन से जुड़ा विवाह पंजीकरण: हर शादी का डिजिटल दस्तावेजीकरण और पहचान सत्यापन अनिवार्य किया जाए।
2. शादी ब्यूरो और मैरिज एजेंटों की निगरानी: जिन संस्थानों के माध्यम से रिश्ता तय हो, उनकी पृष्ठभूमि की जांच और पंजीकरण जरूरी बनाया जाए।
3. फर्जीवाड़ा रोकने के लिए विशेष अदालतें: ऐसे मामलों की सुनवाई के लिए फास्ट ट्रैक कोर्ट बनाए जाएँ ताकि पीड़ितों को न्याय जल्दी मिले।

समाज की भोली सोच और अंधा भरोसा

कई बार ऐसे मामलों में लोग यह सोचकर धोखा खा जाते हैं कि रिश्ता तय करने वाले लोग 'परिचित' हैं या 'समाज के जानकार'। रिश्तों के नाम पर 'प्रस्ताव' भेजना, फिर थोड़ा दिखावा, एक-दो मुलाकातें, और शादी का दबाव — यही ट्रेंड बन चुका है।

फिर आती है समाज की सबसे बड़ी विडंबना: लड़की के परिवार को कम सवाल पूछे जाते हैं, जबकि लड़के के घरवालों से लाख शर्तें मानी जाती हैं। यह असंतुलन भी ठगों के लिए रास्ता आसान करता है।

महिलाओं की छवि पर भी असर

फर्जी दुल्हन गिरोह की खबरें समाज में महिलाओं को शक की निगाह से देखने की प्रवृत्ति को और बढ़ावा देती हैं। यह न केवल महिलाओं के अधिकारों के लिए खतरनाक है, बल्कि असल पीड़ितों को भी न्याय से वंचित करता है। जब कोई महिला सही नियत से रिश्ता बनाना चाहती है, तब समाज का यह अविश्वास उसे शर्मिंदगी और मानसिक पीड़ा देता है।

ऐसे में ज़रूरी है कि कानून ऐसे फर्जीवाड़ों को जड़ से खत्म करे, ताकि महिलाओं के प्रति समाज का विश्वास भी सुरक्षित रह सके।

मीडिया की जिम्मेदारी और भूमिका

आजकल मीडिया भी ऐसे मामलों को सनसनीखेज बनाकर परोसता है। 'दुल्हन फरार', 'फर्जी सास-ससुर', 'लुटेरा परिवार' जैसे शीर्षक बिकते हैं, लेकिन इससे आगे की पड़ताल — जैसे कि ठगों के नेटवर्क, एजेंटों की भूमिका, और पुलिस की निष्क्रियता — अक्सर छूट जाती है।

मीडिया को चाहिए कि वह समाज को जागरूक करे, न कि सिर्फ मज़ाक उड़ाए या TRP के लिए खबरों को मसालेदार बनाए। यह पत्रकारिता की नैतिक जिम्मेदारी है कि वह लोगों को जानकारी दे, चेतावनी दे और सही कदम उठाने की दिशा दिखाए।

पीड़ितों को शर्म नहीं, समर्थन चाहिए

सबसे दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति तब पैदा होती है जब ठगी के शिकार हुए लोग समाज में मज़ाक बन जाते हैं। पीड़ित लड़का या उसका परिवार जब पुलिस के पास जाता है, तो अक्सर 'तू ही बेवकूफ है', 'थोड़ा देख-परख लिया होता', 'लड़की की फोटो में ही शक था' जैसे ताने सुनने को मिलते हैं।

ऐसी सोच को बदलना होगा। पीड़ितों को मदद, काउंसलिंग और कानूनी समर्थन चाहिए, न कि समाज से दुत्कार। अगर समाज पीड़ित के साथ खड़ा हो, तो अपराधियों की हिम्मत नहीं होगी दोबारा किसी के साथ ऐसा छल करने की।

ठगी की नई तकनीकें, पर पुलिस की पुरानी आदतें

आजकल ठग टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल कर रहे हैं — फर्जी दस्तावेज, फर्जी पहचान, और यहां तक कि Deepfake वीडियो और नकली सोशल मीडिया प्रोफाइल्स भी इस्तेमाल किए जा रहे हैं। लेकिन पुलिस अब भी पुराने तरीके अपनाकर जांच करती है — थाने बुलाना, पूछताछ करना, 'कुछ दिन बाद आना'। जब तक पुलिस साइबर अपराध की आधुनिक तकनीकों से लैस नहीं होगी, तब तक ये अपराधी आगे निकलते रहेंगे। हर जिले में साइबर सेल को विवाह संबंधित ठगी मामलों में विशेष प्रशिक्षण देना समय की मांग है।

शिक्षा और चेतना ही असली हथियार

सरकार और समाज को मिलकर एक व्यापक जागरूकता अभियान चलाना चाहिए:

स्कूलों-कॉलेजों में युवाओं को रिश्तों में सतर्कता के बारे में जानकारी देना।

पंचायत और ग्राम सभाओं में शादी से पहले पहचान सत्यापन और कानूनी समझ को बढ़ाना।

डिजिटल प्लेटफॉर्म पर विवाह तय करने वालों के लिए एक गाइडलाइन और चेकलिस्ट जारी करना।

क्योंकि जब तक लोग खुद सतर्क नहीं होंगे, तब तक कोई भी कानून या एजेंसी उन्हें ठगी से नहीं बचा सकती।

निष्कर्ष: रिश्तों की दुनिया में अब ज़रूरत है 'सच' की शिनाख्त

जिस समाज में शादी जैसा पवित्र रिश्ता भी धोखे और अपराध का माध्यम बन जाए, वहाँ आत्मावलोकन की ज़रूरत है। आज हमें यह तय करना होगा कि हम रिश्तों को भावनाओं से नहीं, समझदारी और जिम्मेदारी से जोड़ें।

क्योंकि अब समय आ गया है कि हम हर रिश्ते से पहले सवाल पूछें:

क्या सामने वाला सच बोल रहा है?

क्या दस्तावेज असली हैं?

क्या यह रिश्ता भरोसे पर टिका है या किसी स्वार्थ पर?

जब तक हम यह नहीं करेंगे, तब तक 'फर्जी दुल्हनें' असली घरों को उजाड़ती रहेंगी। और फिर हर बार खबरों में यही लिखा जाएगा:

> "दुल्हन फर्जी, रिश्ता असली बेवकूफी का!"

मीडिया और पत्रकारिता: आलोचनाओं और प्रश्नों के घेरे में

वर्तमान समय में मीडिया और पत्रकारिता का जो स्तर है, वह अक्सर आलोचनाओं और प्रश्नों के घेरे में रहता है।

एक समय था जब पत्रकारिता को समाज का चौथा स्तंभ माना जाता था, जो सरकार और अन्य ताकतवर संस्थाओं से न केवल सवाल करता था, बल्कि जनता के अधिकारों की रक्षा के लिए उनका सशक्त प्रतिनिधि भी था। आज वही मीडिया, जो एक समय सत्य की पक्षधर और लोकतांत्रिक मूल्यों का रक्षक हुआ करता था, अब अपनी स्वतंत्रता और नैतिकता के संकट से जूझ रहा है।

मीडिया और पत्रकारिता का पतन: क्या कारण हैं?

मीडिया और पत्रकारिता के गिरते हुए स्तर का कारण राजनीतिक, वाणिज्यिक, और सांस्कृतिक दबावों का एक जटिल मिश्रण है। यदि हम वर्तमान समय में मीडिया के स्वाभाव को देखे, तो यह साफ दिखाई देता है कि निष्पक्षता, नैतिकता, और सच्चाई की जगह अब स्वार्थ, पक्षपाती रुख, और वाणिज्यिक लाभ ने ले ली है।

1. राजनीतिक दबाव और मीडिया का व्यवहार :

* मीडिया का अक्सर अपने राजनीतिक दायित्वों से समझौता करना पड़ा है। कई बार देखा जाता है कि प्रमुख मीडिया हाउस किसी राजनीतिक दल के विभिन्न स्वार्थों के तहत काम करते हैं, जिससे समाचार संवेदनशील और पक्षपाती बन जाते हैं। संपादक और पत्रकारों पर अक्सर ऐसे दबाव आते हैं, जो उन्हें या तो कुछ विशेष समाचार छुपाने के लिए मजबूर करते हैं, या फिर उन्हें एक पार्टी विशेष के पक्ष में समाचार प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करते हैं।

* इस प्रकार, पत्रकारिता को सत्ता और राजनीतिक एजेंडों द्वारा नियंत्रित किया जाता है, और वह जनता की निरंतरता और निष्पक्षता से खिलवाड़ करता है। यह स्थिति लोकतंत्र के लिए बहुत हानिकारक होती है, क्योंकि जब मीडिया अपनी स्वतंत्रता खो देता है, तो वह जनता को सही सूचना से वंचित कर देता है।

2. वाणिज्यिक दबाव और उसका प्रभाव :

* मीडिया हाउस अक्सर वाणिज्यिक लाभ के लिए संचालित होते हैं। उनका मुख्य उद्देश्य दर्शकों की संख्या बढ़ाना और विज्ञापन प्राप्त करना होता है, न कि निष्पक्ष रिपोर्टिंग करना। इसी कारण, कई बार सेंसेशनलिज़्म और गॉसिप को बढ़ावा दिया जाता है।

* समाचार पत्रिकाओं, टीवी चैनल्स, और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स पर यह देखा जाता है कि हाई रेटिंग प्राप्त करने के लिए तथ्यों से अधिक विवादास्पद और संसारिक मुद्दों को उभारा जाता है। खबरों का तथ्यात्मक या निष्पक्ष होना अब दूसरे स्थान पर है, और विवाद उत्पन्न करने वाले मसले पहले आते हैं।

* टीवी डिबेट्स और ऑनलाइन लेख अक्सर रुचिकर विषयों पर आधारित होते हैं, जिनका असल उद्देश्य सूचना प्रदान करना नहीं, बल्कि प्रचार करना होता है।

3. संपादक और मालिक का नियंत्रण :

* मीडिया के संचालन में एक और बड़ी समस्या यह है कि मालिक और संपादक के निजी हितों का प्रभाव पत्रकारिता पर पड़ता है। मालिकों का लक्ष्य अधिक से अधिक वाणिज्यिक लाभ और प्रचार होता है, जबकि संपादक का ध्यान कभी-कभी अपने संगठन या व्यक्तिगत संबंधों पर होता है, और वे पत्रकारों को रिपोर्टिंग में उस दिशा में काम करने के लिए मजबूर करते हैं, जो मीडिया हाउस के या मालिक के एजेंडों से मेल खाती हो।

* परिणामस्वरूप, पत्रकारिता की स्वतंत्रता बाधित होती है। पत्रकारों को अपनी रिपोर्टिंग को बदलने या दबाने के लिए मजबूर किया जाता है, और इस व्यावसायिक दबाव के कारण पत्रकारिता की नैतिकता की हत्या होती है।

4. पत्रकारों की आत्मसंवेदनहीनता और विवशता :

* पत्रकारों की एक बड़ी संख्या अब स्वतंत्रता के बजाय वित्तीय मजबूरियों और संस्थागत दबावों के तहत काम कर रही है। स्वतंत्र पत्रकारिता की परिभाषा अब पार्टी लाइन और व्यक्तिगत स्वार्थों द्वारा नियंत्रित होती है। शायद अब पत्रकारों के पास वह साहस नहीं रहा, जो कभी था, क्योंकि आजकल पत्रकारों को आलोचना, दबाव, और कभी-कभी शारीरिक खतरों का सामना करना पड़ता है।

* स्टिंग ऑपरेशन और गैर-मान्यता प्राप्त पत्रकारों को हमेशा ज्यादा जिम्मेदारी और कम पुरस्कार मिलता है। हालांकि वे सच्चाई का पर्दाफाश करने की कोशिश करते हैं, लेकिन उन्हें कभी सार्वजनिक सम्मान नहीं मिलता, बल्कि कभी-कभी उन्हें खतरनाक और कानूनी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

*** गिरती पत्रकारिता का प्रभाव :**

1. सामाजिक और राजनीतिक ध्रुवीकरण :

* मीडिया की पक्षपाती रिपोर्टिंग और संवेदनशील खबरों को सनसनीखेज तरीके से प्रस्तुत करने से समाज में ध्रुवीकरण बढ़ता है। जब एक खास राजनीतिक विचारधारा को मीडिया के माध्यम से एकतरफा बढ़ावा दिया जाता है, तो यह समाज के विभिन्न हिस्सों में विरोधाभास और विभाजन उत्पन्न करता है।

* इसके परिणामस्वरूप, लोगों के बीच न केवल भ्रांति फैलती है, बल्कि वे सच्चाई से दूर होकर अपनी-अपनी राय बनाते हैं, जिससे सामाजिक संघर्ष बढ़ता है।

2. लोकतंत्र का खतरा :

* जब पत्रकारिता अपने कार्य में निष्पक्ष और सत्य के प्रति निष्ठावान नहीं रहती, तो लोकतंत्र में समानता और न्याय की अवधारणा कमजोर पड़ जाती है। अगर मीडिया सत्ताधारी दलों के पक्ष में काम करने लगे और विपक्ष की आवाज दबाने लगे, तो लोकतंत्र की स्वतंत्रता और न्याय का अधिकार प्रभावित होता है।

समाधान: पत्रकारिता की पुनर्निर्माण की आवश्यकता

1. नैतिकता और स्वतंत्रता की रक्षा:

* पत्रकारों और संपादकों को अपनी नैतिक जिम्मेदारी को समझना होगा। पत्रकारिता का मूल उद्देश्य सत्य का उद्घाटन करना और जनता का सही मार्गदर्शन करना होना चाहिए, न कि स्वार्थ और राजनीतिक लाभ।

* पत्रकारिता की स्वतंत्रता और नैतिकता को बनाए रखने के लिए मीडिया हाउसों को स्वयं को राजनीतिक और व्यावसायिक दबाव से मुक्त करना होगा।

2. मीडिया साक्षरता का प्रसार :

* जनता को मीडिया के संसाधन, सूचना के स्रोत, और निष्पक्ष रिपोर्टिंग के महत्व को समझाना जरूरी है। अगर लोग मीडिया में आ रही निराधार अफवाहों और पक्षपाती खबरों को पहचानने में सक्षम होंगे, तो मीडिया पर आ रहे दबावों का मुकाबला किया जा सकेगा।

3. सही पत्रकारिता का समर्थन :

* हमें उन पत्रकारों और मीडिया संस्थानों का समर्थन करना होगा जो सच्चाई और निष्पक्षता की दिशा में काम करते हैं। वे ही पत्रकारिता के असली रक्षक हैं और उन्होंने स्वतंत्रता और समानता की रक्षा में अपनी जान भी जोखिम में डाली है।

आज का मीडिया और पत्रकारिता का गिरता हुआ स्तर लोकतंत्र और समाज के लिए चिंता का विषय है। यदि हम इस संकट से बाहर निकलने चाहते हैं, तो हमें अपने पत्रकारों को स्वतंत्रता और नैतिकता के सिद्धांतों के प्रति निष्ठावान बनाना होगा। हमें राजनीतिक और वाणिज्यिक दबावों से मुक्त पत्रकारिता की दिशा में कदम बढ़ाने होंगे ताकि समाज को सही और निष्पक्ष जानकारी मिल सके। इसके साथ ही, हमें जनता की जागरूकता को बढ़ावा देना होगा ताकि वे मीडिया में आई गलतफहमियों और भ्रामक सूचनाओं को पहचान सकें। अगर हम ऐसा करते हैं, तो शायद हम पत्रकारिता के सही मायने को फिर से जीते हुए देख सकेंगे।

सांस की कीमत पूछी गई

साँस-साँस को मोहताज किया,
जीवन को नीलाम किया।
मासूम थी, बस एक साल की,
फिर भी व्यवस्था ने इनकार किया।

₹वेंटिलेटर चाहिए?₹ — पूछा गया,
₹सिफ़ारिश है?₹ — तौल कर कहा।
दोपहर से लेकर रात तलक,
बच्ची की साँसों ने दस्तक दी हर पल।

कभी सिस्टम की फाइल में अटकी,
कभी डॉक्टरों के मुँह के फेर में भटकी।
कंधे पर बैठी थी ममता की पुकार,
पर अस्पताल ने लगाया इंतज़ार।

PGI की गलियों में चीख गूँजती रही,
परदीवारें खामोश रहीं, मशीनें बंद पड़ी रहीं।
नही थी वो वोट, न पहचान की सिफारिश,
बस थी एक जान — मासूम, बेगुनाह, बेपरवाह।

सिस्टम का क्या दोष कहें?
यहाँ तो जिंदा रहने के लिए भी पहचान चाहिए।
गरीब की बेटी हो या किसान का बेटा,
बिना जुड़ाव, बिना सत्ता — नहीं मिलता हक़ जीने का।

- डॉ सत्यवान सौरभ

मुख्यमंत्री के भद्रक कार्यक्रम में मंच पर क्यों बैठे मनमोहन सामल? बिजेड़ी

मनोरंजन सासमल स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: कल मुख्यमंत्री मोहन माझी भद्रक के आधिकारिक दौरे पर गए थे। वहां उन्होंने 275 करोड़ रुपये की लागत वाली एक परियोजना का उद्घाटन किया। हालांकि, उस सरकारी

बैठक में भाजपा अध्यक्ष मनमोहन सामल की मौजूदगी पर सवाल उठे हैं। यह सवाल बीजद पार्टी ने उठाया है।भद्रक से दो बीजद विधायकों ब्योमकेश रॉय और संजीव मल्लिक ने आज एक संवाददाता सम्मेलन में यह सवाल उठाया।उन्हें कहा कि कल भद्रक में भाजपा की कोई बैठक नहीं थी। यह एक सरकारी कार्यक्रम था। उन्होंने सवाल उठाया है कि मनमोहन सामल, जो किसी सरकारी पद पर नहीं हैं, को उस कार्यक्रम में मंच पर क्यों जगह दी गई।

विधायक ब्योमकेश ने कहा कि यह सरकारी कार्यक्रम है, इसलिए जिले के दो विधायकों को आमंत्रित किया जाना चाहिए था। हमें सरकारी कार्यक्रम में भाग लेना चाहिए था। लेकिन ऐसा कैसे मनमोहन सामल को मंच पर कैसे शामिल किया गया।

एनसीसी सीएटीसी शिविर का शुभारंभ

।जोश होश से भरे कैडेट दिखा रहे दमखम,शूटिंग का अभ्यास।।

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा। स्थानीय शास्त्री नगर स्थित पांच राज स्वतंत्र कंपनी एनसीसी यूनिट में 1 जून से 10 जून तक दस दिवसीय सीएटीसी 3 कम आईडीएसएससी प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ किया गया।शिविर कमान अधिकारी लेफ्टीनेंट कर्नल एस एस राठौड़ ने बताया की सीएटीसी शिविर में एनसीसी के लगभग 500 से अधिक कैडेट भाग ले रहे हैं, तथा आईडीएसएससी शूटिंग ट्रेनिंग में उदयपुर ग्रुप के श्रेष्ठ कैडेट भागे रहभे । 10 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण शिविर में कैडेट जमकर दम ख़म दिखाएंगे तथा विभिन्न आर्मी के अधिकारी, एएनओ,सीटीओ के मार्गदर्शन में ड्रिल परेड, मेप रीडिंग, विभिन्न ओब्सटेकल, राइफल शूटिंग, टेंट लगाना तथा प्रकृति का रख रखाव, आपदा प्रबंधन आदि सीखेंगे। शिविर के शुरुआत में लेफ्टिनेंट कर्नल एसएस राठौड़ ने सभी कैडेट को अपना सर्वश्रेष्ठ देने को कहा है ।शिविर के प्रथम दिन सभी कैडेट का शारीरिक मेडिकल परीक्षण तथा डॉक्यूमेंटेशन किया गया। शिविर में सूबेदार प्रेमनाथ, सीएचएम सुशील,जेसीओ, एनसीओ, एनसीसी शिविर में एएनओ लेफ्टीनेंट राजकुमार जैन,लेफ्टीनेंट संजय गोदारा,युधिस्टिर कुमावत, राजकुमार प्रजापत,नारायण सिंह,सत्यनारायण धाकड़,शक्ति सिंह,ओम प्रकाश, मोना राठौड़, अनिमा टेटे आदि अपनी सेवाए दे रहे है।

झारखंड का सबसे बड़ा औद्योगिक क्षेत्र के गोलीचालन में 4 अपराधी 24 घंटे में धराए

कार्तिक कुमार परिच्छा स्टेट हेड- झारखंड

जमशेदपुर , झारखंड का सर्वाधिक बड़ा औद्योगिक इलाका आदित्यपुर थाने अंतर्गत सालडीह बस्ती मे अपराधकर्मियों द्वारा दीपांकर भुईंया को गोली मार कर गंभीर रूप से घायल कर दिया गया था ,जिसपर अपराधियों के खिलाफ आदित्यपुर थाने में 1 जून को एक मामला दर्ज कर अनुसंधान आरंभ की गयी थी ।जिसमें 24 घंटे के भीतर 4 अभियुक्त धराये तथा आग्नेय अस्त्र बरामद हुए है ।

इस काण्ड के त्वरीत उद्भेदन एवं इसमे संलिप्त अज्ञात अपराधकर्मियों की गिरफ्तारी हेतु अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, सरायकेला के नेतृत्व मे एक टीम का गठन किया गया था । गठित टीम द्वारा भौतिक साक्ष्यों एवं गुप्त सूचना के आधार पर 24 घंटो के अंदर काण्ड का त्वरीत उद्भेदन करते हुए संलिप्त अपराधकर्मी जिसमें मोहित प्रमाणिक उर्फ छोटकु, उम्र- करीब 21 वर्ष, सुजल अधिकारी उर्फ सुजल बच्चा उर्फ बोडु, उम्र- करीब 21 वर्ष, रोहित देशपांडे उर्फ चिकु, उम्र- करीब 22 वर्ष, जिशू गोप, उम्र- करीब 20 वर्ष को सरायकेला खरसांवां पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया । पूछताछ के क्रम मे गिरफ्तार अपराधकर्मियों के स्वीकारोक्ति बयान के आधार पर काण्ड मे उपयोग एक लोडेड पिस्टल, 7.65 एम एम , दो जिंदा गोली एवं घटना अंजाम करने मे प्रयोग मे लाये गये हिरो हंडा मोटरसाईकिल को बरामद किया गया है। अब तक के अनुसंधान एवं गिरफ्तार अपराधकर्मियों से पूछताछ मे अपराधकर्मी सुभाष प्रमाणिक के बेटे मोहित प्रमाणिक द्वारा अगस्त- 2024 मे अपने पिता के उपर हुए फायरिंग को लेकर बदले की भावना से अपने दोस्तों के साथ मिलकर दीपांकर भुईया को जान मारने की नियत से गोली मारकर गंभीर रूप से घायल करने की बात प्रकाश मे आयी है, जो जांच का विषय है ।

घटना मे प्रयुक्त लोडेड पिस्टल-1 मैगजीन सहित ।02, 7.65 एम एम का जिंदा गोली- दो ।घटना मे प्रयुक्त काला-ग्रे कलर का हिरो स्पेल्डर मोटरसाईकिल, संख्या- JH05DT जे एच 05डी टी 9883। गिरफ्तार अपराधकर्मी रोहित देशपांडे का अपराधिक इतिहास में आदित्यपुर थाना कांड सं0- 365/2024, दिनांक 30.09.2024, धारा - 126(2)/115(2)/117(2)/303(2)/324(4)/3(5)/109 बी एन एस दर्ज है ।

छापामारी दल में समीर सवैया, अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी, सरायकेला बिनोद तिर्की, पु0नि0-सह-थाना प्रभारी, आदित्यपुर थाना । विपुल कुमार ओझा, पु0अ0नि0 (अनुसंधानकर्ता), आदित्यपुर थाना ।धीरंजन कुमार, पु0अ0नि0, आदित्यपुर थाना । आलम चंद महतो, पु0अ0नि0, आदित्यपुर थाना , विनोद टुडू, पु0अ0नि0, आदित्यपुर थाना , राजेश कुमार, स0अ0नि0, आदित्यपुर थाना ।आ0 372 नितिश कुमार पाण्डेय शामिल थे।

आदर्श शिक्षक, कुशल प्रशासक, संवेदनशील साहित्यकार और समाजसेवी का सुंदर संगम

डॉ. मुश्ताक अहमद,,,,

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह के व्यक्तित्व का सबसे बड़ा पहलू उनका आत्मविश्वास और समाज के प्रति समर्पण है। वे जिस भी भूमिका में रहे—शिक्षक, प्रिंसिपल, ग्रामीण विकास अधिकारी या मंच संचालक—हर जगह उन्होंने अपने आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच, विनम्रता और नेतृत्व क्षमता से लोगों को प्रभावित किया। आत्मविश्वास किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है, जो न केवल बाहरी रूप बल्कि मानसिक और भावनात्मक मजबूती को भी दर्शाता है।

उनकी आवाज़ और मंच संचालन में निपुणता, लोगों से जुड़ने की क्षमता, और समाज के लिए कुछ कर गुजरने की लगन उनके व्यक्तित्व को सबसे अलग और प्रभावशाली बनाती है।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह का व्यक्तित्व बहुआयामी और प्रेरणादायक है। वे न केवल एक संवेदनशील शायर और कवि हैं, बल्कि एक समर्पित शिक्षक, कुशल प्रिंसिपल और ग्रामीण विकास विस्तार अधिकारी के रूप में भी अपनी पहचान बना चुके हैं। उनके जीवन के ये विविध पहलू उन्हें एक संपूर्ण व्यक्तित्व प्रदान करते हैं।

डॉ. शाह ने शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। वे एक प्रेरक शिक्षक रहे हैं, जिन्होंने विद्यार्थियों को न केवल पाठ्यक्रम की शिक्षा दी, बल्कि जीवन के मूल्यों और नैतिकता का भी पाठ पढ़ाया। एक प्रिंसिपल के रूप में उन्होंने विद्यालय के प्रशासन, अनुशासन और शैक्षिक गुणवत्ता को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया।

ग्रामीण विकास विस्तार अधिकारी के रूप में डॉ. शाह ने गाँवों में समस्याओं के समाधान और ग्रामीण समाज में जागरूकता फैलाने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। उन्होंने जमीनी स्तर पर काम करके समाज की बेहतरी के लिए कई योजनाओं को सफलतापूर्वक लागू किया।

मंच संचालन में उनकी विशेष पहचान है। उनकी आवाज़ में गजब का आकर्षण और आत्मविश्वास है, जो श्रोताओं को बांधे रखता है। चाहे कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम हो, साहित्यिक गोष्ठी या समाजिक आयोजन—डॉ. शाह की प्रस्तुति में हमेशा ऊर्जा और उत्साह रहता है। दर्शक उनकी आवाज़ के दीवाने हैं और उनके संचालन में कार्यक्रम जीवंत हो उठते हैं।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह का व्यक्तित्व एक आदर्श शिक्षक, कुशल प्रशासक, संवेदनशील साहित्यकार और समाजसेवी का सुंदर संगम है। उनकी बहुआयामी प्रतिभा और समाज के प्रति समर्पण उन्हें एक प्रेरणा-स्त्रोत बनाता है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023